जय-तिथि-पत्रक

श्री वीर-निर्वाण संवत्
२५४३-२५४४
विक्रम संवत् २०७४

तेरापंथ संवत्
२५७-२५८
ईस्वी सन् २०१७-२०१८

सम्पादक : मंत्रीमुनि सुमेरमल

जैन विश्व भारती
लाडनूं - 341306 (राजस्थान)
दूरभाष : 01581-226025, 224671, 226080, फैक्स : 01581-227280
E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

अहिंसा यात्रा
सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति

₹20

जैन विश्व भारती

मानवीय मूल्यों को समर्पित संस्था

प्रमुख गतिविधियां : एक नजर

शिक्षा :

- जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
- विमल विद्या विहार सीनियर सैकण्डरी स्कूल
- महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर
- महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर
- समण संस्कृति संकाय
- केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी

सेवा :

- सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला
- श्रीमद् आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र, बीदासर
- स्व. माणकचन्द मनोहरी देवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सालय, बीदासर
- विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा केन्द्र
- समणी केन्द्र व्यवस्था

साहित्य :

- प्रकाशन एवं वितरण
- आगम मंथन प्रतियोगिता
- इतिहास मंथन प्रतियोगिता

संस्कृति :

- तुलसी कला दीर्घा (आर्ट गैलेरी)

शोध :

- आगम सम्पादन
- हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपियों की सुरक्षा एवं संरक्षण

समन्वय :

- पुरस्कार एवं सम्मान
- विदेशों में प्रचार–प्रसार

साधना :

- प्रेक्षाध्यान
- प्रेक्षाध्यान पत्रिका

उक्त सभी गतिविधियों में संपूर्ण समाज की सहभागिता एवं सहयोग हेतु सादर निवेदन

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं–341306, जिला : नागौर (राज.) फोन : 01581–226080 I 224671

E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

आशीर्वचन

जैन विश्व भारती के परिसर का कण-कण जप-तप से भावित है। भिक्षु विहार में अनवरत जप-तप की तरंगें प्रवाहित होती रहती है। प्रज्ञालोक में अध्यात्म चिंतन और ध्यान के विकिरण सतत संचरित रहते हैं। तुलसी अध्यात्म नीडम् का वायब्रेशन उस समूचे भाग को प्रभावित करता है। आगम, शोध व सम्पादन के क्रम में आगमों के पाठ का पारायण होता रहता है। मुझे तो लगता है कि यहां अध्यात्म का वातावरण है, इसलिए यहां आने वाले अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। मेरा एक सुझाव है कि यहां आने वाले ध्याता बनकर आएं और ध्येय के प्रति समर्पित रहें। ऐसा होने पर प्रसन्नता और पवित्रता हर पल आपकी परिक्रमा करती रहेगी।

- आचार्य तुलसी

जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती संस्थान जैन विद्या के विश्व प्रसिद्ध केन्द्र हैं। जैन विश्व भारती के पास ज्ञान की विशाल राशि है। इसकी मिट्टी में सात सकारों के बीज हैं। आचार्यश्री तुलसी का तप तेजस्वी सूर्य है, जो इसकी उर्वरा को बढ़ाएगा। ज्ञान का स्रोत है, दर्शन का संरक्षण है, चरित्र की हवा है। जिससे यह बगीचा प्राच्य विद्याओं के फूलों की सुगंध को, सुवास को क्षितिज पर फैलाएगा। उस सुवास और सौरभ से विश्व मानस प्रभावित हो, जीवन बोध पाएगा।

- आचार्य महाप्रज्ञ

जैन विश्व भारती एक गौरवशाली संस्था है। उसके द्वारा जैन विद्या, शिक्षा, साहित्य, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसी विभिन्न महत्त्वपूर्ण गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का महनीय मार्गदर्शन इस संस्था को प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) उसके साथ जुड़ा हुआ है। लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर मुनिवृंद, समणीवृंद और मुमुक्षुवृंद का भी आवास स्थल बना हुआ है। तेरापंथ समाज मानों इस माने भी भाग्यशाली है कि उसके पास इतनी बड़ी संस्था है। यह संस्था आध्यात्मिक आरोहण करती रहे तथा समाज को आध्यात्मिक पोषण देती रहे। शुभाशंसा।

- आचार्य महाश्रमण

With Best Compliments from

किसका है? यह मत देखो।
क्या है? इस पर ध्यान दो।
अच्छा विचार व अच्छी कृति, फिर वह किसी की
भी क्यों न हो, स्वीकार कर लो।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

भीखमचंद जीतमल चोरड़िया

बीदासर

J.M. Jain

Cloth Merchant & Commission Agents

2285/9, Gali Hinga Beg, Tailak Bazar, Delhi-110006

With Best Compliments from

दूसरी कीमती चीजें यदि खो जाए तो उन्हें दुबारा प्राप्त किया जा सकता है,
किन्तु समय एक ऐसी चीज है, जिसे खोने के बाद दुबारा कभी नहीं पाया जा सकता।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

Rameshchand, Vijaraj, Rakesh Bohra

Musaliya-Chennai-Dubai

Pradeep Stainless India Pvt. Ltd.

C 3, Phase II, 3rd Main Road, MEPZ SEZ, Tambaram
Chennai- 600 044, Mob. : 09840177330

With Best Compliments from

किसी के द्वारा प्रशंसित होने मात्र से
तुम बड़े नहीं हो और
किसी के द्वारा निन्दित होने मात्र से
तुम छोटे नहीं हो ।
यह सोचो,
तुम्हारे कार्य महानता वाले है या अधमतावाले ?

– आचार्य महाश्रमण

Sri Poosalal Suganibai Anchaliya Charitable Trust

P. Sampathraj Anchaliya
P. Tarachand Anchaliya
P. Gyanchand Anchaliya

Sirkali-Chennai-Delhi-Marudhar (Padukallan)

With Best Compliments from

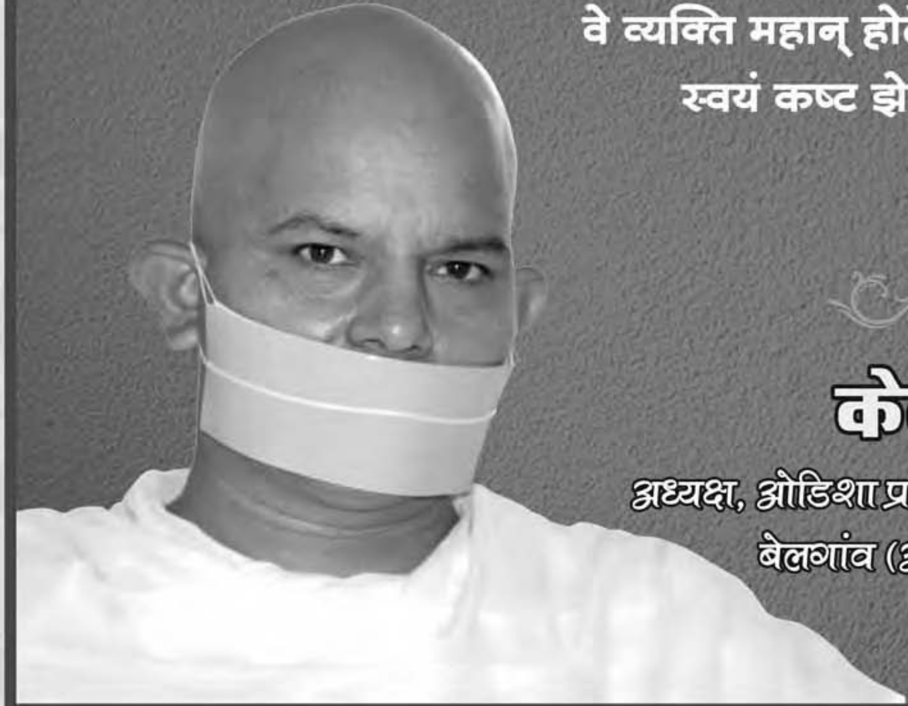

वे व्यक्ति महान् होते हैं, जो दूसरों की भलाई के लिए स्वयं कष्ट झेलने के लिए तत्पर रहते हैं।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

केवलचंद जैन

अध्यक्ष, ओडिशा प्रान्तीय श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा

बेलगांव (ओडिशा)-रायपुर (छत्तीसगढ़)

भावना, क्रिया और परिणाम की एक शृंखला है।
कार्य का परिणाम प्रायः भावना पर आधारित होता है।
शुद्ध भावना से की गई क्रिया शुभ परिणाम लाती है।

– आचार्य महाश्रमण

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

सरला देवी – महेन्द्र कुमार जैन

महनसर (राजस्थान) – किशनगंज (बिहार)
बैंगलोर (कर्नाटक)

प्रकाशकीय

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय द्वारा विगत 39 वर्षों से मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर जय-तिथि-पत्रक का प्रकाशन प्रतिवर्ष निरंतर किया जा रहा है। इसी क्रम में 153वें मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर संवत् 2074 का जय-तिथि-पत्रक सुधी पाठकों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। जय-तिथि-पत्रक में ज्योतिषीय सूचनाओं, विशेष पर्वों, महत्त्वपूर्ण दिवसों व अनुष्ठानों के साथ-साथ संस्थाओं एवं विभिन्न संघीय गतिविधियों, कार्यक्रमों आदि से संबंधित उपयोगी सामग्री प्रकाशित की गई है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार तेरापंथ दर्शन मनीषी मंत्रीमुनि श्री सुमेरमलजी (लाडनूं) ने जय-तिथि-पत्रक संपादन के गुरुतर दायित्व का सम्यक् निर्वहन करते हुए दैनंदिन आवश्यकता की ज्योतिषीय सूचना-सामग्री प्रस्तुत करने की कृपा की है, हम मंत्री मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। मुनिश्री उदितकुमारजी के महनीय मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। श्री जीतमल नाहटा, कोलकाता का सामग्री संकलन कार्य में सहयोग प्राप्त हुआ, तदर्थ हार्दिक आभार।

जय-तिथि-पत्रक के प्रकाशन के लिए हमें अनेक महानुभावों का आर्थिक सौजन्य प्राप्त हुआ है। उनका उदार सहयोग-भाव संस्था की प्रवृत्तियों को गतिशील रखने में योगभूत बनता है। सभी अनुदानदाताओं के प्रति हम हार्दिक आभार ज्ञापित करते हैं। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोगी सभी महानुभावों के सहयोग हेतु आभार।

विश्वास है कि जय-तिथि-पत्रक की सामग्री सभी उपयोगकर्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी तथा इसमें प्रस्तुत सामग्री से उपयोगकर्ता त्याग-प्रत्याख्यान के लिए प्रेरित होंगे।

बी. रमेशचंद बोहरा
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

मालचन्द बेगानी
विभागाध्यक्ष, समण संस्कृति संकाय

राजेश कोठारी
मंत्री, जैन विश्व भारती

01 जनवरी, 2017

अध्यक्ष की कलम से

जैन विश्व भारती तेरापंथ धर्मसंघ की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। संपूर्ण जैन समाज में यह एक गौरवशाली संस्था के रूप में प्रतिष्ठित है। इसके द्वारा अनेक संघीय एवं समाजोपयोगी गतिविधियां संचालित की जा रही है।

आचार्य तुलसी के सपनों की कामधेनु जैन विश्व भारती आज केवल एक संस्था के रूप में नहीं, अपितु मानव कल्याणकारी प्रवृत्तियों के केन्द्र, प्राच्य एवं जैन विद्या की संरक्षण स्थली एवं आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व-निर्माण स्थल के रूप में विविध दिशाओं में कार्य कर रही है। समाज-परिवर्तन एवं समाज-विकास की आचार्यश्री तुलसी की प्रबल उत्कंठा को जैन विश्व भारती ने यथार्थ में परिणित करने का प्रयास किया है। इस संस्था के माध्यम से आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी और आचार्यश्री महाश्रमणजी का भविष्योन्मुखी एवं युगान्तरकारी चिंतन देश-विदेश तक पहुंचा है, जिस कारण से आज जैन विश्व भारती प्रस्तर खण्डों में नहीं, अपितु लोकमानस में प्रतिष्ठित है।

शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय–इस 'सप्तसकार' को केन्द्र में रखकर कार्य करने वाली यह संस्था वर्तमान में अपने अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आशीर्वाद, समाज के सहयोग एवं सक्षम कार्यकर्ताओं के श्रम के फलस्वरूप अनेक मानव कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन कर रही है। लगभग साढ़े चार दशक की यात्रा में जैन विश्व भारती ने अनेक पड़ावों को पार किया है। संस्था के सूत्रधारों के समक्ष संभावनाओं का असीम आकाश भी है और उसे प्राप्त करने का उत्साह, उमंग और जज्बा भी। उस असीम विकास के लिए परमपूज्य आचार्यप्रवर का पावन आशीर्वाद और चारित्रात्माओं का पावन पथदर्शन निरन्तर हमें प्राप्त है। सादर निवेदन है कि संपूर्ण समाज तन-मन-धन एवं चिंतन से जैन विश्व भारती की असीम विकास यात्रा के सहयात्री बनें।

बी. रमेशचंद बोहरा
अध्यक्ष

01 जनवरी 2017

इतिहास के पन्नों पर सिलीगुड़ी

प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर कंचनजंगा की मनोरम वादियों की तलहटी में तीरस्ता और महानन्दा नदियों के किनारे बसे सिलीगुड़ी शहर का इतिहास ज्यादा अर्वाचीन नहीं है। पहाड़ी भाषा में इसका पूर्व नाम सिलगढ़ी था जो कि दार्जिलिंग एवं सिक्किम पहाड़ी क्षेत्रों समेत समूचे पूर्वोत्तर भारत का प्रवेशद्वार है। इसके इसके चारों तरफ सागवान लकड़ी के घने जंगल और चाय के हरे-भरे बगीचे स्थित हैं। सन् 1947 में जब भारत विभाजन के साथ पूर्वी पाकिस्तान का निर्माण हुआ तब से सिलीगुड़ी शहर की विकास यात्रा का शुभारम्भ हुआ। अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति एवं प्रवासी व्यवसायियों की कार्यशैली, दृढ़ संकल्प एवं दानशीलता के बल पर सन् 1970 के दशक से इस शहर का विकास द्रुतगति से प्रारंभ हुआ और आज यह पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता के पश्चात् इस सूबे का सबसे बड़ा दूसरा विकसित शहर है।

सामरिक महत्त्व

यहां से विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पहाड़ों की रानी दार्जिलिंग एवं टाइगर हिल मात्र 80 किमी., गंगटोक (सिक्किम) 120 किमी. की दूरी पर स्थित है। पड़ोसी देश बांग्लादेश की अंतर्राष्ट्रीय सीमा शहर से केवल 8 किमी. की दूरी पर अवस्थित है। यहां से भारत-चीन सीमावर्ती नाथुला दर्रा 115 किमी., पशुपतिनाथ की धरती नेपाल का धुलाबाड़ी शहर मात्र 35 किमी. एवं भुटान का फुंचुलींग शहर 135 किमी. की दूरी पर है। पूर्वोत्तर राज्यों में आवागमन के लिए एकमात्र सिलीगुड़ी होकर ही रेल और राजमार्ग है। विभिन्न राज्यों एवं राष्ट्रों की सीमाओं के निकट बसा होने के कारण इस शहर का भारत के लिए सामरिक महत्त्व भी बहुत अधिक है। इसी कारण इस शहर के आस-पास सेना एवं सीमा सुरक्षा बल के अनेक केन्द्र स्थित है।

विशिष्ट शहर

सिलीगुड़ी शहर का प्रमुख व्यवसाय चाय, जूट, लकड़ी, चावल, आलू, अनारस, अदरक, बड़ी इलायची, तेजपत्ता आदि से संबंधित है। इस क्षेत्र की उत्पादित दार्जिलिंग चाय विश्व प्रसिद्ध है। देश की आन्तरिक चाय खपत की आपूर्ति का एक बड़ा भाग यहां से प्रेषित होता है। इसी प्रकार प्रतिवर्ष यहां लाखों देशी-विदेशी पर्यटकों का आगमन होता है, जो कि इस क्षेत्र की अर्थ-व्यवस्था का प्रमुख आधार है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के आधार पर सिलीगुड़ी थ्री 'टी' सिटी (टी, टिम्बर एवं टूरिज्म) के नाम से जाना जाता है।

यहां का विमानपत्तन बागडोगरा है एवं प्रमुख रेल स्टेशन न्यू जलपाईगुड़ी है जो देश के सभी प्रमुख शहरों से सीधा जुड़ा हुआ है। न्यू जलपाईगुड़ी भारत का एकमात्र ऐसा रेल स्टेशन है जहां एक साथ नैरो गेज, मीटर गेज और ब्रॉड गेज की सुविधाएं उपलब्ध है। सिलीगुड़ी

जंक्शन व सिलीगुड़ी टाउन–ये दो ऐतिहासिक रेलवे स्टेशन भी यहां विद्यमान है जहां से दार्जिलिंग के लिए विश्व प्रसिद्ध ट्वॉय ट्रेन भी जाती है। शैक्षणिक दृष्टि से यहां उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय एवं मेडिकल कॉलेज भी स्थित है। चिकित्सा सुविधा हेतु पूरा शहर तथा इसके आसपास का क्षेत्र यहां की उच्चस्तरीय व्यवस्थाओं पर निर्भर है। पश्चिम बंगाल सरकार का लघु सचिवालय 'उत्तरकन्या' भी यहां स्थित है। इन सभी विशेषताओं के कारण इस शहर को उत्तर बंगाल की अघोषित राजधानी कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सिलीगुड़ी का जैन तेरापंथ श्रावक समाज

बंगला की एक सुप्रसिद्ध कहावत है–'जेखाने जाए ना गाड़ी, ओखाने जाए मारवाड़ी।' इसी कहावत को चरितार्थ करते हुए हमारे उद्यमशील पूर्वज आजीविका की खोज में जान हथेली पर रख कर सुदूर राजस्थान से यात्रा करते हुए इन पहाड़ी एवं दुर्गम क्षेत्रों में आये और अपने कठोर परिश्रम एवं उद्यमशीलता, दृढ़ संकल्प एवं दानशीलता के आधार पर इस क्षेत्र में अपनी व्यावसायिक साख स्थापित कर पाये। सिलीगुड़ी के आस-पास के क्षेत्र जिनमें प्रमुख दार्जिलिंग, सिपाहीधोरा, कालिंपोंग, मोंगपू, गंगटोक आदि पहाड़ी शहर तथा कूचबिहार, अलीपुरद्वार, दिनहाटा, माथाभांगा, चैंगड़ाबांधा, जलपाईगुड़ी आदि समतल क्षेत्र और वर्तमान बांग्लादेश स्थित नल्फामारी, पार्वतीपुर, नाटोर, सिराजगंज आदि उस समय के प्रमुख व्यापारिक मुकाम जाने जाते थे। इन सभी क्षेत्रों में राजस्थान के थली संभाग के प्रमुख श्रावक परिवारों के यहां व्यावसायिक प्रतिष्ठान थे एवं उनका जूट, कपड़ा, गल्ला-किराना, सोना-चांदी तथा तंबाकू आदि के व्यापार पर लगभग एकाधिकार था। ओसवाल व्यापारियों की यहां की स्थानीय जनता में अच्छी प्रतिष्ठा थी। यहां के प्रमुख राजघरानों के साथ भी हमारे पूर्वजों के घनिष्ठ एवं प्रभावशाली संबंध थे। अपने दृढ़ धार्मिक संस्कारों के कारण व्यापारिक लेन-देन तथा खानपान की शुद्धता हमारे पूर्वजों ने बनाये रखी। यहां लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व आसपास के विभिन्न पहाड़ी एवं समतल क्षेत्रों से हमारे समाज के कुछ प्रमुख परिवार जिनमें भंसाली (टमकोर-छापर), पारख (श्रीडूंगरगढ़ एवं सरदारशहर), कोठारी (ददरेवा), नाहटा, कुण्डलिया एवं गोठी (सरदारशहर), बैद (चूरू), सेठिया (गंगाशहर) आदि यहां पर आये और अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान स्थापित किये।

भारत विभाजन के उपरान्त जब सिलीगुड़ी शहर का विकास एवं प्रमुख वाणिज्यिक केन्द्र के रूप में शुरू हुआ तब अपने समाज के परिवार यहां क्रमशः बढ़ते गये। आज यहां जैन समाज के लगभग 500 परिवार हैं जिनमें 400 के आसपास तेरापंथी परिवार हैं। यहां पर भगवान पार्श्वनाथ का मंदिर भी है जो स्थानीय दिगम्बर जैन समाज द्वारा संचालित होता है।

सिलीगुड़ी के साधु साध्वियां

हमासरे धर्मसंघ के अनेकों साधु, साध्वियों, समणीवृन्द के संसारपक्षीय परिवार (न्यातीले) यहां निवास करते हैं। ये परिवार निरन्तर उनकी सेवा दर्शन का लाभ लेते रहते हैं जिससे उनके धार्मिक संस्कारों

की अक्षुण्णता बनी रहती है और धर्मसंघ के प्रति उनकी आस्था गहरी एवं दृढ़ होती है।

चारित्रात्माओं का पदार्पण एवं विचरण

गणाधिपति तुलसी की दूरदर्शिता एवं दायित्वशील श्रावक स्व. संचियालालजी नाहटा (छापर-बरौनी) के प्रयत्नों को साकार रूप मिला जब सर्वप्रथम सन् 1964 में मुनिश्री धनराजजी स्वामी का पदार्पण इन क्षेत्रों में हुआ। इसके पश्चात् तो साधु-साध्वियों का लगातार विचरण इस क्षेत्र में होता रहा। गुरुओं की असीम अनुकंपा इस क्षेत्र पर निरन्तर बनी रही एवं फलस्वरूप चारित्रात्माओं के चातुर्मास व समणी केन्द्र लगातार सिलीगुड़ी क्षेत्र में होते रहे। साध्वीश्री किस्तूरांजी, साध्वीश्री मोहनांजी, साध्वीश्री गौरांजी, साध्वीश्री राजीमतीजी, साध्वीश्री यशोधराजी, साध्वीश्री मोहनकुमारीजी, साध्वीश्री सूरजकुमारीजी, साध्वीश्री प्रमिलाकुमारीजी, मुनिश्री पूनमचन्दजी, मुनिश्री कन्हैयालालजी, मुनिश्री कमलकुमारजी, शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी, मुनिश्री सुमतिकुमारजी, मुनिश्री गुलाबचन्दजी 'निर्मोही', साध्वीश्री अणिमाश्रीजी, साध्वीश्री आनन्दश्रीजी आदि का पदार्पण हुआ एवं उसका धर्म लाभ हमें मिला। चातुर्मास मुनिश्री राजकरणजी, साध्वीश्री विद्यावतीजी, साध्वीश्री सोहनांजी, साध्वीश्री चांदकुमारीजी, साध्वीश्री जयश्रीजी, साध्वीश्री सोमलताजी, साध्वीश्री कुन्दनरेखाजी, साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी के हमारे क्षेत्र को मिले। मर्यादा महोत्सव साध्वीश्री कंचनप्रभाजी एवं साध्वीश्री प्रमिलाकुमारीजी के सान्निध्य में यहां आयोजित हुए। सिलीगुड़ी पधारने वाले प्रायः सभी साधु-साध्वियों की दार्जिलिंग एवं गंगटोक यात्रा की सेवा का सुअवसर यहां के श्रावक समाज को मिलता है। सन् 2007 में 16 समणियों का अभूतपूर्व मिलन समारोह यहां आयोजित हुआ। सर्दी, गर्मी, वर्षा, स्थानाभाव, कल्प आदि परिषहों को सहन करते हुए हमारे पूज्य साधु-साध्वियों ने जिस प्रकार गुरु इंगित की आराधना करते हुए इस क्षेत्र को उर्वर बनाया एवं अपने अथक परिश्रम से श्रावक समाज की सार-संभाल की उसी का सुपरिणाम आज इस पूरे इलाके में दिखायी दे रहा है। आज पूर्वोत्तर का पूरा श्रावक समाज पूज्यप्रवर की अहिंसा यात्रा को सफलतम बनाने में तन-मन-धन से लगा हुआ है।

संघीय गतिविधियां

सिलीगुड़ी क्षेत्र में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति, कन्या मण्डल, किशोर मण्डल आदि सभी संस्थाएं व्यवस्थित रूप से संघ व समाज की सेवा में सक्रिय हैं। यहां दो ज्ञानशालाएं नियमित रूप से संचालित हो रही हैं। **आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ साहित्य विक्रय केन्द्र** यहां पिछले 13 वर्षों से संचालित हैं। जो इस पूरे क्षेत्र की धार्मिक साहित्य एवं उपकरणों की आपूर्ति करता है। शहर के मध्य में पांच मंजिला तेरापंथ भवन बना हुआ है जो श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ ट्रस्ट द्वारा संचालित है। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिलीगुड़ी के तत्त्वावधान में शहर से 11 किमी. की दूरी पर वर्धमान एजुकेशनल ट्रस्ट द्वारा प्रदत्त भूमि पर दो नये तीन तल्ले सभा भवनों का निर्माण कार्य चालू है, जिनका कुल क्षेत्रफल 80,000 वर्ग फीट है। **प्रथम भवन के भूमितल का लोकार्पण परम पूज्य आचार्य**

महाश्रमणजी के सान्निध्य में दिनांक 28 फरवरी, 2016 को सुसंपन्न हो चुका है। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर एवं युवा लोक की स्थापना भी तेरापंथ युवक परिषद के निजी परिसर में यहां हो चुकी है। विश्वस्तरीय लॉ कॉलेज के निर्माण की योजना तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा निर्माणधीन है। हमारे क्षेत्र का धर्मसंघ की केन्द्रीय संस्थाओं में लगातार सक्षम प्रतिनिधित्व रहा है। वर्तमान में भी महासभा, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्, अणुव्रत महासमिति, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम एवं जैन विश्व भारती में उच्च पदों पर हमारे यहां के श्रावक समाज के प्रतिनिधि पदासीन हैं एवं संघ तथा समाज को अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

तपस्या एवं संलेखणा

धार्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ यहां त्याग तपस्या की झड़ी लगी रहती है। लगभग प्रति वर्ष चातुर्मास के समय मासखमण, पखवाड़ा, अठाई आदि का अच्छी तादाद में क्रम बना रहता है। उपवास, बेला, तेला, पौषध एवं संवर आदि भी संतोषजनक संख्या में हमारे यहां श्रावक समाज द्वारा होते रहते हैं। इस क्षेत्र का पहला चौविहार संथारा श्रावक श्री शोभाचन्दजी भंसाली (छापर) का 17 दिनों का हुआ। इसके पश्चात् जो उल्लेखनीय संलेखणा संथारे हुए उनका विवरण इस प्रकार है–

1. श्रीमती बरजी देवी छाजेड़ (सरदारशहर), 68 दिन, 2. श्रीमती मनोहरी देवी बोथरा (लाडनूं) 38 दिन, 3. श्रीमती गोरज्या देवी दुगड़ (सरदारशहर) 19 दिन, 4. श्रीमती गणपति देवी गिड़िया (लाडनूं) 16 दिन, 5. श्रीमती मनोहरी देवी सेठिया (राजलदेसर), 4 दिन 6. श्री माणचन्दजी दुधेड़िया (छापर) 1 दिन।

153वां मर्यादा महोत्सव

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ पूर्वोत्तर भारत की सफलतम अहिंसा यात्रा व गुवाहाटी चातुर्मास सुसंपन्न करके दिनांक 29 जनवरी, 2017 को सिलीगुड़ी में पधार रहे हैं। जहां आप श्री के सान्निध्य में १५३वां मर्यादा महोत्सव दिनांक 1-2-3 फरवरी, 2017 को मनाया जाना घोषित है। इस भव्य समारोह में आप सभी देश-विदेश के श्रावक समाज को सिलीगुड़ी का श्रावक समाज हार्दिक आमंत्रित कर रहा है। हमें पूरा विश्वास है कि आप सभी इस महोत्सव के अवसर पर पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाएंगे एवं हमें स्वागत का अवसर प्रदान करेंगे।

–: निवेदक :–

मन्नालाल बैद	**धनराज भंसाली**	**रतनलाल भंसाली**	**नवरतन पारख**	**मोहनलाल कोठारी**
अध्यक्ष	**स्वागताध्यक्ष**	**महामंत्री**	**वरिष्ठ उपाध्यक्ष**	**कोषाध्यक्ष**

आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति, सिलीगुड़ी

कोलकाता का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य

सिटी ऑफ जॉय, सिटी ऑफ पैलेसेस और भारत के सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक केन्द्र के रूप में विख्यात कोलकाता पश्चिम बंगाल की राजधानी है, जो बंगाल की खाड़ी से 180 किलोमीटर दूर हुगली नदी के तट पर स्थित है। कोलकाता अपने साहित्यिक, क्रांतिकारी और कलात्मक धरोहरों के लिए विख्यात है। भारत की बौद्धिक एवं सांस्कृतिक राजधानी के साथ-साथ इस शहर को सृजनात्मक ऊर्जा का शहर भी कहा जाता है। दूसरी ओर कोलकाता पूर्वी भारत का प्रमुख व्यावसायिक, वाणिज्यिक और वित्तीय केन्द्र भी है।

1886.67 वर्ग किलोमीटर में फैला कोलकाता भारत का दूसरा सबसे बड़ा और तीसरा सबसे घनी आबादी वाला महानगर है।

कोलकाता भारत का वह शहर है जिसने देश को पांच नोबल पुरस्कार प्राप्त विद्वान दिए हैं, जिनके नाम हैं–सर रोनाल्ड रॉस, सी.वी. रमन, रवींद्रनाथ टैगोर, मदर टेरेसा और अमर्त्य सेन।

कोलकाता शहर का इतिहास लगभग 325 वर्ष पुराना है।

कोलकाता महानगर विभिन्न संस्कृतियों का समवाय है, जहां देश के विभिन्न भागों के लोग परस्पर सौहार्द, प्रेम और सद्भाव के साथ रहते हैं। यहां के बासिंदों में बंगालियों के अतिरिक्त मारवाड़ी, बिहारी, गुजराती, मुसलमान, पंजाबी, नेपाली, उड़िया, तमिल, तेलुगु, असमी, मराठी, कोंकणी, मलयाली, एंग्लो इंडियन, पारसी, चीनी, तिब्बती आदि शामिल है।

कोलकाता के इतिहास में महान विभूतियों का विशिष्ट योगदान रहा है। धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र में रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, समाज सुधारकों में राजाराममोहनराय, केशवचंद्र सेन, दार्शनिकों-विचारकों में अरविन्द घोष, इंदिरा देवी चौधुरानी, विपनचंद्र पाल, साहित्यकारों में ईश्वरचंद्र विद्यासागर, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रवींद्रनाथ टैगोर, माइकल मधुसूदन दत्त, काजी नजरुल इस्लाम, राष्ट्रवादियों में बंकिमचंद्र चटर्जी ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने साहित्य के माध्यम से अपने युग में राष्ट्रवादियों को बहुत प्रभावित किया। उनके आनंद मठ में लिखा गया गीत वंदे मातरम् आज भारत का राष्ट्रगीत है। इनके अतिरिक्त सुभाषचंद्र बोस, खुदीराम बोस जैसे स्वतंत्रता सेनानी भी हुए। जिन्होंने बंगाल को भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में अग्रणी स्थान दिलाया। कोलकाता के शिक्षाविदों में आशुतोष मुखर्जी, वैज्ञानिकों में सत्येन्द्रनाथ बोस, मेघनाद साहा, जगदीशचंद्र बोस, प्रफुल्लचंद्र राय, अनिल कुमार गाइन, उपेन्द्रनाथ ब्रह्मचारी, सी.वी. रमन, अर्थशास्त्रियों में अमर्त्य सेन, बीसवीं शताब्दी के प्रमुख साहित्यकारों में शरतचंद्र चट्टोपाध्याय, ताराशंकर बंद्योपाध्याय, माणिक बंद्योपाध्याय, विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय, आशापूर्ण देवी, शिशिरेंदु मुखोपाध्याय, बुद्धदेव गुहा, महाश्वेता देवी, समरेश बसु, समरेश मजुमदार, संजीव चट्टोपाध्याय, सुनील गंगोपाध्याय आदि सुख्यात हैं। खेल के क्षेत्र में सौरव गांगुली ने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोलकाता का नाम रोशन किया है।

शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र कोलकाता में अनेक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय हैं, जिनमें कलकत्ता विश्वविद्यालय, प्रेसिडेंसी विश्व-विद्यालय, हिंदू स्कूल, यादवपुर विश्वविद्यालय, बंगाल इंजीनियरिंग एंड साइंस यूनिवर्सिटी, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट आदि शामिल हैं।

मां काली के प्रति कोलकातावासियों की विशेष आस्था है। कोलकाता को काली का आशीर्वाद माना जाता है और काली पूजा व दुर्गा पूजा कोलकाता का सबसे महत्त्वपूर्ण उत्सव है।

हावड़ा पुल, विक्टोरिया मेमोरियल, बिड़ला तारामंडल, कालीघाट, रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ, दक्षिणेश्वर काली मंदिर, साइंस सिटी, नेशनल लाइब्रेरी, नेहरू चिल्ड्रेन म्यूजियम आदि इस शहर की विशेष पहचान है। यह शहर रेलमार्गों, वायुमार्गों एवं सड़क मार्गों द्वारा पूरे देश के विभिन्न भागों से जुड़ा हुआ है।

तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में भी कोलकाता की भूमि का चिरस्मरणीय योगदान है। भारत के पांच महानगरों में इस महानगर का तेरापंथ धर्मसंघ की दृष्टि से विशिष्ट स्थान है तथा श्रावक समाज की आबादी की दृष्टि से कोलकाता को तेरापंथ की राजधानी माना जाता है। यहां पर लगभग 7,000 तेरापंथी परिवार निवास करते है।

तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य महामना कालूगणि राज के स्वर्णिम शासन काल में वि.सं. 1913 में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का गठन हुआ जिसका प्रमुख केन्द्र बना कोलकाता महानगर। यहीं से हमारे धर्म संघ की लगभग सभी धार्मिक गतिविधियों का संचालन, प्रसारण एवं निर्धारण होता रहा। सामयिक अपेक्षा को ध्यान में रखते हुए समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा महासभा की गतिविधियों को व्यवस्थित संचालन हेतु वि.सं. 1950 में भवन का क्रय किया गया जिसका नामकरण हुआ महासभा भवन। प्रसन्नता की बात यह रही कि तत्कालीन प्रबुद्ध चिन्तक श्रावक समाज की सूझ-बूझ से महासभा भवन में तेरापंथी विद्यालय की स्थापना की गई।

कोलकाता महानगर ऐसा सौभाग्यशाली है जहां तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने इसी महासभा भवन में सफल चातुर्मासिक प्रवास किया। वह ऐतिहासिक मंगलमय वर्ष था वि.सं. 2016। उससे पूर्व वि.सं. 2015 में साध्वीश्री राजीमतीजी का यहां चतुर्मास हुआ। तब से लेकर आज तक प्रायः लगातार साधु-साध्वियों के चतुर्मास हो रहे हैं। अब तक के चतुर्मासों में संतों में शासन गौरव मुनिश्री बुद्धमलजी, शासन गौरव मुनिश्री राकेशकुमारजी, मुनिश्री राजकरणजी, मुनिश्री गुलाबचंदजी 'निर्मोही', मंत्रीमुनि मुनिश्री सुमेरमलजी लाडनूं तथा शासनश्री मुनिश्री धर्मरुचिजी एवं मुनिश्री आलोककुमारजी के चतुर्मास हो चुके हैं। साध्वियों में साध्वीश्री किस्तूरांजी, साध्वीश्री मोहनांजी, साध्वीश्री गौरांजी, साध्वीश्री यशोधराजी, साध्वीश्री सोहनकुमारीजी, साध्वीश्री चांदकुमारीजी, साध्वीश्री जयश्रीजी, साध्वीश्री विद्यावतीजी, साध्वीश्री मधुस्मिताजी, साध्वीश्री सोमलताजी, साध्वीश्री जतनकुमारीजी 'कनिष्ठा', साध्वीश्री कंचनप्रभाजी, साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी, साध्वीश्री कनकश्रीजी, साध्वीश्री अणिमाश्रीजी, साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी, साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी एवं साध्वीश्री यशोमतीजी के चातुर्मास हो चुके हैं।

शुरू के कई वर्षों तक समागत साधु-साध्वियां यहां लगभग दो चतुर्मास करते। पहला महासभा भवन में तथा दूसरा मित्र परिषद् भवन में। अन्यत्र चातुर्मासिक प्रवास स्थल उपलब्ध नहीं था, लेकिन कालान्तर में कोलकाता के विभिन्न क्षेत्रों में चातुर्मास होने लगे। प्रारम्भ में राजस्थान से समागत श्रावक सपरिवार बहुत कम आते इसलिए अपना अलग से मकान, बिल्डिंगें या फ्लैट्स बनाने की अपेक्षा महसूस नहीं की गई। 70-80 वर्ष पूर्वथली संभाग के कुछ विशिष्ट परिवारों की यहां गद्दियां व ऑफिसें बनी परन्तु गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी की चरणधूलि का स्पर्श पा यहां के श्रावक समाज की विलक्षण समृद्धि बढ़ी। आज यहां सैकड़ों नहीं बल्कि हजारों की संख्या में श्रावक समाज सपरिवार निवासी बनकर धर्मसंघ को सेवाएं दे रहे हैं।

कुछ समय तक जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा पूरे भारत की गतिविधियों को संचालित करने के साथ कोलकाता में आने वाले साधु-साध्वियों की सेवा व्यवस्था का दायित्व निभाती पर बाद में आचार्यश्री तुलसी की दूरगामी प्रज्ञा के परिणाम स्वरूप श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कलकत्ता का गठन हुआ जो महासभा की कृति है। तत्पश्चात् यहां साउथ कलकत्ता सभा, उत्तर हावड़ा सभा, साउथ हावड़ा सभा, पूर्वांचल सभा, उत्तरांचल सभा, मध्य उत्तर कोलकाता सभा, टालीगंज सभा, लिलुआ सभा, हिन्दमोटर सभा, रिसड़ा सभा, बाली-बेलूड़, उत्तरपाड़ा आदि सभाओं का गठन हुआ। तेरापंथ युवक परिषद् तथा तेरापंथ महिला मंडल कोलकाता, साउथ हावड़ा महिला मंडल, उत्तर हावड़ा महिला मंडल, उत्तरपाड़ा, रिसड़ा, हिन्दमोटर महिला मंडल आदि संगठन प्रभावी व कार्यकारी बने। अणुव्रत समिति, जीवन विज्ञान एकेडमी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, जैन कार्यवाहिनी संस्थाएं यहां पर विशेष कार्य कर रही है। सभाओं के गठन के बाद सभा भवनों का भी निर्माण हुआ—उत्तरहावड़ा तेरापंथ भवन, साउथ हावड़ा तेरापंथ भवन, पूर्वांचल तेरापंथ भवन एवं साउथ कोलकाता तेरापंथी भवन, लिलुआ सभा भवन। यहां की सभी संस्थाएं केन्द्र के निर्देशानुसार आध्यात्मिक गतिविधियों का व्यवस्थित संचालन करती है। अखिल भारतीय स्तर पर यहां के अनेकों कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रीय अध्यक्ष व विभिन्न पदों पर सेवाएं दी है तथा वर्तमान में दे रहे है। संघसेवी श्रावकों को उनकी संघीय सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए आचार्यों के द्वारा समय-समय पर समाजभूषण, कल्याण मित्र, शासनसेवी, श्रद्धानिष्ठ श्रावक, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति आदि विभिन्न अलंकरणों से संबोधित किया गया। इसके साथ-साथ चारों जैन समाज में भी परस्पर सौहार्द का सुन्दर वातावरण है। सबसे अधिक गौरव की बात यह है कि तेरापंथ धर्मसंघ की वर्तमान साध्वीप्रमुखा महाश्रमणी कनकप्रभाजी की जन्मस्थली भी कोलकाता है। यहां की धरा में जन्में होनहार व्यक्तित्व संघ में दीक्षित होकर साधु-साध्वी के रूप में सेवाएं देते हुए कोलकाता का गौरव बढ़ा रहे है। कोलकाता से उपासक - उपासिकाएं, जैन स्कालर, तत्वज्ञ श्रावक - श्राविकाएं अच्छी संख्या में धर्मसंघ को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

कोलकाता आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की विशेष कृपापात्र महानगर रहा है वर्तमान में एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की महत्ती कृपा का आशीर्वाद निरन्तर मिल रहा है और उसी कृपादृष्टि का प्रसाद

है। सन् 2017 का कोलकाता में पूज्यप्रवर का चतुर्मास। जो कोलकाता के न्यू टाउन राजरहाट क्षेत्र में नव-निर्मित आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के प्रांगण के महाश्रमण विहार में होने जा रहा है। यह विशाल प्रांगण 1,87,000 वर्गफीट क्षेत्र में फैला हुआ है तथा इसमें 6 लाख वर्गफीट का निर्माण कार्य हुआ है जो वास्तव में विराट व विलक्षण है। महाश्रमण विहार प्रांगण संभवतः अब तक की तेरापंथ समाज की सबसे बृहत्तम परियोजना है, जहां शैक्षणिक, आध्यात्मिक, आवासीय एवं सामाजिक गतिविधियों का नियमित संचालन होगा।

यह प्रांगण तेरापंथ धर्म समाज की विशिष्ट उपलब्धि बनेगा एवं शिक्षा व अध्यात्म के विकास के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। उल्लेखनीय है कि अभी तक के तेरापंथ समाज में निर्मित भवनों में यह सबसे बड़ा रचनात्मक संस्थान होगा। यहीं पर 2017 में चतु सि प्रवास संबंधी सभी व्यवस्थाएं लगभग एक ही स्थान पर सुनियोजित की जाएगी। कोलकाता का चतु सि पूरे देशभर के लिए आकर्षण बना हुआ है।

कोलकाता की धरा का यह परम सौभाग्य है कि 58 वर्षों की सुदीर्घ अवधि के पश्चात् आचार्यश्री महाश्रमणजी का पावन चतु सि यहां हो रहा है। कोलकाता का श्रावक समाज आचार्यप्रवर के आगमन की प्रतीक्षा में पलक पांवड़े बिछाये आपका अभिवंदन करने को समुत्सुक है। महातपस्वी आचार्यवर 2 जून 2017 को कोलकाता की सीमा में प्रवेश करेंगे तथा विभिन्न उपनगरों का स्पर्श करते हुए कोलकाता में उनका प्रथम शुभागमन होगा। अनन्त शक्ति व उल्लास के साथ कोलकाता के विशालतम ऑडिटोरियम नेताजी इन्डोर स्टेडियम में समस्त कोलकाता के जैन व जैनेतर समाज के द्वारा अहिंसा पुरुष का नागरिक अभिनन्दन समारोह होगा। भैक्षव शासन के सूर्य धर्म सम्राट् आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ कोलकाता के विभिन्न अंचलों को अपनी चरणरज से पावन करते हुए 2 जुलाई 2017 को राजरहाट में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश करेंगे। इस चतुर्मास के दौरान अनेकों भव्य आयोजन होंगे। नवयुग का सृजन होगा।

2017 के ऐतिहासिक चतुर्मास के सुअवसर पर देश-विदेश में प्रवासित सभी साधार्मिक बंधुओं को आगमन हेतु हमारा स्नेहिल आमंत्रणहै। आप सपरिवार अधिकाधिक संख्या में कोलकाता पधार पर गुरु उपासना का लाभ ले एवं उन अविस्मरणीय क्षणों के साक्षी बने। हमें विश्वास है कि आचार्यश्री के श्रम की एक-एक बूंद प्रगति की सीप में ढलकर मोतियों के रूप में प्रगट होगी और आप सबके सहयोग व शुभागमन से 2017 का यह चतुर्मास आध्यात्मिक अमृतांजन का दुर्लभ दस्तावेज होगा। आप सभी को भाव भरा आमंत्रण।

निवेदक

आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति 2017

कोलकाता

अध्यक्ष	**महामंत्री**
कमल दूगड़	**सूरज बरड़िया**
मो. 09830030522	**मो. 09831143436**

आचार्य महाश्रमण

जन्म : वि.सं. 2019, वैशाख शुक्ला नवमी (13 मई 1962) सरदारशहर
पिता : स्व. श्री झूमरमलजी दूगड़
माता : स्व. श्रीमती नेमादेवी दूगड़
दीक्षा : वि.सं. 2031 वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (5 मई 1974) सरदारशहर
अन्तरंग सहयोगी : वि.सं. 2042, माघ शुक्ला सप्तमी (16 फरवरी 1986) उदयपुर
साझपति : वि.सं. 2043, वैशाख शुक्ला चतुर्थी (13 मई 1986) ब्यावर
महाश्रमण पद : वि.सं. 2046, भाद्रव शुक्ला नवमी (9 सितम्बर 1989) लाडनूं
युवाचार्य पद : वि.सं. 2054, भाद्रव शुक्ला द्वादशी (14 सितम्बर 1997) गंगाशहर
आचार्य पदाभिषेक : वि.सं. 2067, द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी (23 मई 2010) सरदारशहर
महातपस्वी : वि.सं. 2064, भाद्रपद शुक्ला पंचमी (17 सितम्बर 2007) उदयपुर
शान्तिदूत : वि.सं. 2068, ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी (29 मई 2011) उदयपुर
श्रमण संस्कृति उद्‌गाता : वि.सं. 2069, आश्विन कृष्णा चतुर्दशी (14 अक्टूबर 2012) जसोल
प्रकाशित पुस्तकें : आओ हम जीना सीखें, दुःख मुक्ति का मार्ग, क्या कहता है जैन वाङ्मय, संवाद भगवान से (भाग-1,2), शिक्षा सुधा, शेमुषी, मेरे गीत, धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो, संपन्न बनो, विजयी बनो, रोज की एक सलाह, शिलान्यास धर्म का, अदृश्य हो गया महासूर्य, निर्वाण का मार्ग।

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रमुख कृतियां

दुःख मुक्ति का मार्ग

आचार्यश्री महाश्रमण ने इस पुस्तक में साधना के रहस्यों को प्रस्तुत किया है। सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति में यह कृति मार्गदर्शक की भूमिका अदा करती है।

क्या कहता है जैन वाङ्मय

इस पुस्तक में जैन शास्त्रों में उपलब्ध सफलता के सूत्रों में से चुनिंदा मोतियों को पिरोया गया है। प्रस्तुत कृति आचार्यश्री महाश्रमण के हृदयस्पर्शी प्रवचनों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है।

आओ हम जीना सीखें

जीता हर कोई है, किन्तु कलापूर्ण जीना कोई-कोई जानता है। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यश्री महाश्रमण ने कलात्मक जीवन के सूत्रों को प्रकाशित करते हुए जीवन की प्रत्येक क्रिया का व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया है। वस्तुतः यह कृति 'कैसे जीएं' इस प्रश्न का सटीक समाधान है।

संवाद भगवान से

प्रतिष्ठित जैनागम उत्तराध्ययन के २९वें अध्ययन पर आधारित इस पुस्तक में भगवान महावीर और उनके प्रमुख शिष्य गौतम के रोचक संवाद के माध्यम से मन में संशय पैदा करने वाले प्रश्नों को विस्तृत रूप में समाहित किया गया है। यह कृति दो भागों में उपलब्ध है।

महात्मा महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ तेरापंथ के आचार्य, अनुशास्ता, साहित्यकार और प्रवचनकार थे। इन सबसे पहले वे एक सन्त थे, महात्मा थे, उनकी आत्मा में महानता थी। उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमण ने उन्हें नजदीकी से देखा और जाना। प्रस्तुत पुस्तक में श्री महाप्रज्ञ के नौ दशकों के इतिहास और रहस्यों को उजागर किया गया है।

रोज की एक सलाह

लघु आकार में प्रस्तुत यह पुस्तक 'गागर में सागर' उक्ति को चरितार्थ करती है। आचार्य महाश्रमण द्वारा सूक्तियों में दी गई 'रोज की एक सलाह' हर व्यक्ति के लिए प्रतिदिन की पर्याप्त खुराक है। सदा साथ रखी जा सकने वाली यह कृति न केवल सफलता की प्राप्ति में सहायक है, अपितु व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

१. सुखी बनो २. सम्पन्न बनो ३. विजयी बनो

आचार्य महाश्रमण ने प्रस्तुत तीनों पुस्तकों में श्रीमद्भगवद्गीता और उत्तराध्ययन की तुलनात्मक विवेचना करते हुए साधक का सुन्दर पथदर्शन किया है। तीन भागों में उपलब्ध यह ग्रन्थमाला जहां दो महनीय ग्रन्थों को युगीन रूप में प्रस्तुति देती है, वहीं अध्यात्मरसिकों के लिए पोषक का कार्य भी करती है।

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रस्तुत पुस्तक में जैन तत्त्वज्ञान, साधना के प्रयोगों, महापुरुषों और उनके अवदानों आदि विविध विषयों से संबद्ध उपयोगी और प्रेरणास्पद सामग्री संजोई गई है।

शिलान्यास धर्म का

धर्म का आदि बिन्दु है–सम्यक्त्व। आचार्य महाश्रमण की प्रस्तुत कृति सम्यक्त्व, उसके लक्षण, दूषण, भूषण तथा देव, गुरु, धर्म आदि विषयों पर आधारित प्रवचनों और प्रश्नोत्तरों का संग्रह है। जैन अनुयायियों की आस्था के दृढ़ीकरण में यह कृति सहायक की भूमिका अदा करती है।

निर्वाण का मार्ग

अध्यात्म साधना का अन्तिम लक्ष्य है–निर्वाण। भगवान् महावीर और गौतम बुद्ध ने वर्षों तक साधना कर निर्वाण के रहस्यों को प्राप्त किया और जनता को दिखाया–निर्वाण का मार्ग। जैनागम उत्तराध्ययन और बौद्धग्रंथ धम्मपद पर आधारित आचार्यश्री महाश्रमण की प्रलम्ब प्रवचनमाला के चुनिंदा मोतियों से निर्मित इस पुस्तक को पढ़कर अध्यात्मरसिक व्यक्ति परम सुख का पथ प्राप्त कर सकता है।

• प्राप्ति स्थान •

जैन विश्व भारती, लाडनूं–8742004849, आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल–9928393902, ई-मेल : **jainvishvabharati@yahoo.com**

Books are available online at http://books.jvbharati.org

जैन विश्व भारती का महत्वपूर्ण उपक्रम
आगम साहित्य का प्रकाशन

वाचना प्रमुख
आचार्य श्री तुलसी

मुख्य संपादक विवेचक
आचार्य श्री महाप्रज्ञ

प्रधान संपादक
आचार्य श्री महाश्रमण

अधिक जानकारी हेतु संपर्क सूत्र : जैन विश्व भारती लाडनूं : 8742008489, आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल : 9928393902
ईमेल : jainvishavbharati@yahoo.com

Books are available online at : **http\\books.jvbharati.org**

जैन विश्व भारती, लाडनूं में संचालित
सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला
द्वारा शास्त्रीय विधान से निर्मित प्रामाणिक एवं विश्वसनीय कुछ विशिष्ट आयुर्वेदिक औषधियां

क्र. सं.	औषध का नाम	उपयोग	वजन (ग्राम)	मूल्य
01.	सेवाभावी सुपर्वप्राश	शक्तिवर्धक व स्फूर्तिदायक	900	585/-
	(मकरध्वज, केशर, चांदी भस्म युक्त)	पौष्टिक योग	400	260/-
02.	सेवाभावी स्पेशलप्राश	शक्तिवर्धक व स्फूर्तिदायक	900	450/-
	(केशर, रससिंदूर, पौष्टिक योग चांदी भस्म युक्त)		400	205/-
03.	सेवाभावी सितोपलादि योग	पुरानी खांसी, श्वास, फेफड़ों के रोग में उपयोगी	30 पुड़िया	225/-
04.	सेवाभावी प्रतिदिनम् चूर्ण	कब्ज को दूर करने में उपयोगी	100	50/-
			500	240/-
05.	सेवाभावी अग्निसंदीपन चूर्ण	पाचक एवं गैस निवारक	100	110/-
			500	525/-
06.	सेवाभावी तुलसीप्रभावटी	मधुमेह (शुगर) में उपयोगी	30	145/-
			100	475/-
07.	सेवाभावी अर्जुनघनसत्व वटी	रक्तचाप व हृदयरोग में उपयोगी	10	30/-
			100	285/-

08.	सेवाभावी दिव्यतेज वटी	जुखाम, बुखार आदि में उपयोगी	05	90/-
09.	सेवाभावी कंठसुधाकर वटी	कफ, खांसी आदि में उपयोगी	10	40/-
			100	380/-
10.	सेवाभावी अमृतम् पिल्स	मुख शोधक	05	60/-
11.	सेवाभावी स्पेशल मंजन	दंत रोगों में उपयोगी	80	90/-

: नोट :

✦ औषधियां चिकित्सक की सलाहनुसार सेवन करें।

✦ सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला द्वारा निर्मित उक्त औषधियों के अतिरिक्त लगभग 150 प्रकार की अन्य औषधियां पूर्ण शास्त्रीय विधि से प्रामाणिक रूप में तैयार की जाती है।

औषधियां मंगवाने या डीलरशीप के लिए संपर्क करें

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला
जैन विश्व भारती परिसर, पोस्ट : लाडनूं-341306
जिला : नागौर (राजस्थान)
संपर्क : 01581-226969, 082906 26767

भावभरा आमंत्रण
अहिंसा यात्रा
सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति
आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति 2017, कोलकाता
2 जुलाई 2017 से 10 नवम्बर 2017 तक
अहिंसा यात्रा प्रणेता शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी का 2017 में कोलकाता चतुर्मास
समस्त अध्यात्मप्रेमी समाज को सपरिवार आमंत्रण
नागरिक अभिनंदन-
18 जून, 2017 नेताजी इंडोर स्टेडियम
चातुर्मासिक प्रवेश -
2 जुलाई, 2017 चतुर्मास प्रवास स्थल
स्वागतोत्सुक आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति 2017, कोलकाता
तेरापंथ युवक परिषद ,
अणुव्रत समिति,
जीवन विज्ञान एकेडमी ,
तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा :
कोलकाता, साउथ कोलाकात, पूर्वांचल, उत्तर हावडा, साउथ हावड़ा
मध्य उत्तर कोलकाता, उत्तर कोलकाता, टालीगंज लिलुआ, बाली-बेलूड़,
उत्तरपाड़ा, हिन्द मोटर, सिरड़ा।
आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउंडेशन
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल :
कोलकाता, उत्तर हावड़ा, साउथ हावड़ा, उत्तरपाड़ा,
हिन्दमोटर, रिसड़ा।
जैन कार्यवाहिनी एवं समस्त संस्थाएं।
आवास संपर्क - 09433331046
चतुर्मास प्रवास स्थल - महाश्रमण विहार - आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउंडेशन प्रांगण परिसर संख्या, 2219, प्लाट सं.IIIA/1, एक्शन एरिया- III, न्यूटाउन राजरहाट कोलकाता-700 156
फोन : 033-24862420, 8820172017 Email : info@kolkatachaturmas.com Website- www.kolkatachaturmas.com

नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान

दुनिया में शक्ति का महत्त्व होता है। शक्तिहीन व्यक्ति अपने आप में रिक्तता अनुभव करता है। कभी-कभी शक्तिविहीन मनुष्य अपने आपको दयनीय और असहाय भी अनुभव करता है। सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है। अन्य शक्तियों का भी अपना-अपना महत्त्व होता है।

गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का एक नया उपक्रम प्रारंभ किया। आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशन में वह उसी रूप में विधिवत् चल रहा है। उसका उद्देश्य है–आत्मशुद्धि और ऊर्जा का विकास। उसकी कालावधि आश्विन शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की निर्धारित की गई है। चैत्र शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की कालावधि में भी इसकी आराधना की जा सकती है। संपूर्ण विधि एवं समय सारिणी इस प्रकार निश्चित की गई है–

प्रातः ९.३० से १०.००

'चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' – का पांच बार पाठ
चंदेसु निम्मलयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु – का तेरह बार पाठ
आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु–का तेरह बार पाठ
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु – का तेरह बार पाठ
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु – का तेरह बार पाठ
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु – का इक्कीस बार पाठ
'चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।' – का पांच बार पाठ

ॐ ह्रीं क्लीं क्ष्वीं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ।।१ ।।
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ।।२ ।।
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ।।३ ।।
वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोई उवहम्मई।
अहागड़ेसु रीयंति, पुप्फेसु भमरा जहा ।।४ ।।
महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ।।५ ।।– का सात बार पाठ

प्रातः १०.०० से १०.३०–आध्यात्मिक प्रवचन
मध्याह्न २.३० से ३.१५ आगम पाठ का स्वाध्याय।

(दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि आदि के मूल पाठ का स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण एवं व्याख्या)

पश्चिम रात्रि—४.४५ से ५.३०

उवसग्गहरं पासं (उपसर्गहर स्तोत्र) आदि पांच श्लोक एवं 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण' का नौ बार पाठ। फिर 'विघनहरण' का जप।

उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ।।१ ।।
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ।।२ ।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ।।३ ।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायपब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।४ ।।
इह संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ।।५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास
विसहर वसह जिण फुल्लिंग ह्रीं श्रीं नमः ।।

विघनहरण

विघनहरण मंगलकरण, स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिंत्या काम ।।

जप और आगम-स्वाध्याय के साथ तप का योग भी आवश्यक माना गया है। तप में एकासन, आयंबिल, षड्विगय वर्जन, पंच विगय वर्जन और दस प्रत्याख्यान में से किसी एक तप की आराधना इस अवधि में की जाए। व्यक्तिगत इच्छा के अनुसार नौ दिनों तक एक ही तप अथवा वैकल्पिक तप की आराधना की जा सकती है।

निर्धारित कालावधि और करणीय क्रम को यथावत् रखते हुए स्थानीय सुविधानुसार समय में परिवर्तन भी किया जा सकता है। साधु-साध्वियों की भांति श्रावक-श्राविकाएं भी इसमें संभागी बन सकते हैं। संभागी श्रावक-श्राविकाओं के लिए निम्नांकित नियम भी अनुष्ठान काल में पालनीय हैं—

ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोजन-विरमण (चौविहार/तिविहार), जमीकंद का वर्जन।

अनुष्ठान का प्रारंभ प्रथम दिन प्रातः ९.३० से यानी प्रातःकालीन सत्र में किया जाए एवं अनुष्ठान का समापन रात्रि के ५.३० बजे यानी रात्रिकालीन सत्र में किया जाए।

विषय-प्रवेश

कोष्ठक विवरण

जय-तिथि-पत्रक का पहला कोष्ठक अंग्रेजी दिनांक का है और फिर वार का है। उसके बाद तिथि का कोष्ठक है। उसके आगे के दो कोष्ठक में क्रमशः इतने बजे व मिनट तक का संकेत है। छठा कोष्ठक नक्षत्र का है। सातवें व आठवें में नक्षत्र के कितने बजे व मिनट तक का सूचन है। नौवें व दसवें में क्रमशः सूर्योदय व सूर्यास्त कितने बजे होता है इसका निदर्शन है। सूर्योदय व सूर्यास्त लाडनूं को केन्द्र मानकर स्टेण्डर्ड टाइम में दिया गया है। ग्यारहवें कोष्ठक में प्रथम प्रहर कितने बजे आती है तथा बारहवें कोष्ठक में दिन का एक प्रहर कितने घंटे व मिनट का होता है, इसका दिग्दर्शन है। तेरहवें कोष्ठक में चन्द्रमा तथा चौदहवें कोष्ठक में विशेष विवरण के अंतर्गत योग तथा भद्राकाल है। ये भी बजे व मिनट के क्रम से हैं।

तिथि-पत्रक में बजे-मिनट रेलवे समय-सारिणी पद्धति से दिये गये हैं। मध्य रात्रि में १२ बजे से रेलवे समय सारिणी के अनुसार २४ बजे होता है, के बाद ०० समय से शुरू कर २४ बजे तक २४ घंटे मानते हुए चलता है। जैसे—चैत्र शुक्ला तृतीया २३/४४ बजे है। इसका तात्पर्य है—यह तिथि उस दिन २३ बजकर ४४ मिनट तक है। अर्थात् रात्रि में ११ बजकर ४४ मिनट तक है। चैत्र शुक्ला पंचमी १७/५१ बजे है। इसका अर्थ है यह तिथि उस दिन सायं ५ बजकर ५१ मिनट तक रहेगी। इसी तरह बैसाख कृष्णा चतुर्थी को अनुराधा नक्षत्र १३/४१ बजे है। अर्थात् उस दिन दोपहर १ बजकर ४१ मिनट तक है।

तिथि व नक्षत्र के बजे-मिनट बराबर में हैं। वे बजे, मिनट से स्पष्ट हैं। चंद्रमा के आगे संख्या ऊपर नीचे हैं। चंद्रमा के ऊपर वाली संख्या बजे व नीचे वाली मिनट है। जैसे—चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को चंद्रमा कन्या राशि में $\frac{०६}{५२}$ अर्थात् प्रातः ६ बजकर ५२ मिनट पर कन्या राशि में प्रवेश करेगा। चंद्रमा के लिए इतना विशेष है कि उसका प्रवेश काल दिया है। विशेष विवरण स्पष्ट है। इसमें योग व अन्य के आगे संख्या बराबर में हैं।

तिथि, नक्षत्र आदि के साथ जहां शून्य (०) अंकित है, वह उस दिन 'पूरे दिन और पूरी रात' है अर्थात् वह तिथि या नक्षत्र उस दिन सूर्योदय से पूर्व शुरू हो गया और दूसरे दिन सूर्योदय होने के बाद तक रहा। वह समय अगले दिन की पंक्ति में है। जैसे—बैशाख कृष्णा प्रतिपदा को स्वाति नक्षत्र के आगे (०) अंकित है जिससे यह नक्षत्र पूरे दिन-रात है। ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीया (प्रथम) के आगे (०) अंकित है अर्थात् यह तिथि पूरे दिन-रात है।

सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय होने के ठीक पहले तक का समय ''रात्रि समय'' और उसके बाद ''दिवा समय'' होता है।

विशेष विवरण के कोष्ठक में प्रदत्त योगों के सांकेतिक अक्षरों में पूर्ण नाम इस प्रकार हैं :—

- र.—रवि योग (शुभ व कुयोगनाशक)
- अ.—अमृत सिद्धि योग (शुभ)
- राज.—राजयोग (शुभ)
- कु.—कुमार योग (शुभ)

- सि.—सिद्धि योग (शुभ)
- मृ.—मृत्यु योग (अशुभ)
- व्या.—व्याघात योग (अशुभ)
- वै.—वैधृति (अशुभ)
- व्य.—व्यतिपात योग (अशुभ)
- ज्वा.—ज्वालामुखी योग(अशुभ)
- पं.—पंचक (अशुभ) घास, लकड़ी एकत्र करने, घर की छत बनाने, दक्षिण यात्रा करने में वर्जित।
- भ.—भद्राकाल (शुभ-अशुभ दोनों)
- यम.—यमघंट योग (अशुभ)

नोट : शास्त्रीय मान्यता है कि मध्याह्न के पश्चात् अशुभ योगों का दोष नहीं रहता।

भद्रा-काल

श्रेष्ठ कार्यों में भद्रा-काल होना वर्जित है, किन्तु शास्त्रकारों ने भद्रा को शुभ भी माना है, जो इस प्रकार है—मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चंद्रमा में भद्रा का वास स्वर्ग में रहता है। यह भद्राकाल शुभ और ग्राह्य है।

कन्या, तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में भद्रा का वास नागलोक (पाताल) में रहता है। यह भद्राकाल भी लक्ष्मीदायक-धनदायक होने से शुभ है।

कुंभ, मीन, कर्क और सिंह के चंद्रमा में भद्रा का वास मृत्युलोक में होता है। यह अशुभ है, इसलिए शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जनीय है।

भद्राकाल समय-विशेष के साथ शुभ भी बताया है।

शुक्ल पक्ष की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और कृष्ण पक्ष की भद्रा सर्वसंज्ञक है। मतान्तर से रात्रि की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और दिन की भद्रा सर्वसंज्ञक है। सर्वसंज्ञक भद्रा के मुख की पांच घटी (२ घंटा) और वृश्चिक संज्ञक भद्रा की पुच्छ की तीन घटी (१ घंटा १२ मि.) शुभ कार्य में त्याज्य है।

तिथि-पत्रक के विवरण पृष्ठों के बाद कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बैंगलोर व जोधपुर—इन छह शहरों के महीने की पहली व पन्द्रहवीं तारीख के सूर्योदय व सूर्यास्त का समय दिया गया है।

समय-सारिणी के बाद नक्षत्र के नाम का अक्षर और राशि की तालिका है। फिर राशि स्वामी एवं गुरु दर्शन के नक्षत्र हैं। फिर घातचक्र है। इसके बाद यात्रा में चंद्र विचार, योगिनी विचार चक्र, दिशाशूल विचार चक्र तथा काल-राहू विचार चक्र है। इनसे अगले पृष्ठ पर सुयोग-कुयोग चक्र है। अंतिम पृष्ठ पर पोरसी प्रमाण, राहुकाल, दिन एवं रात्रि के चौघड़िये हैं।

चौघड़िया-अवलोकन

दिन का चौघड़िया सूर्योदय से प्रारंभ होता है तथा रात्रि का चौघड़िया सूर्यास्त से प्रारंभ होता है। एक दिन में आठ चौघड़िये व रात्रि में आठ चौघड़िये होते हैं।

चौघड़िया का काल दिन-रात छोटे-बड़े होने के अनुसार न्यूनाधिक होता रहता है। प्रत्येक दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने पर जो एक भाग प्राप्त होगा वह उस दिन में एक चौघड़िया का मान होगा, अर्थात् दिन की समयावधि का आठवां हिस्सा एक चौघड़िया होता है। इसी प्रकार सूर्यास्त से अगले सूर्योदय तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने से प्राप्त होने वाला एक हिस्सा रात्रि के चौघड़िये का मान होता है। अर्थात् रात्रि की समयावधि का आठवां हिस्सा रात्रि का एक चौघड़िया होता है।

चौघड़िये में उद्वेग, काल और रोग—ये तीन अशुभ हैं। शेष तीन लाभ,

अमृत और शुभ–ये चौघड़िये श्रेष्ठ होते हैं। शुक्र के अर्थात् चल (चंचल) वेला के चौघड़िये को भी अच्छा मानते हैं। श्रेष्ठ चौघड़िये में सभी कार्य करने प्रशस्त हैं। अमृत का चौघड़िया सभी शुभ कार्यों में अत्युत्तम है।

इस तिथि-पत्रक में लाडनूं को केन्द्र मानकर सूर्योदय एवं सूर्यास्त दिया गया है। उससे पूर्व दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट पहले सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। उससे पश्चिम दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट बाद में सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। लाडनूं अक्षांश २७°-४०°, उत्तर पर है। रेखांश ७४°-२४° पूर्व है। अयनांश २३° १७'-१८' रेखांतर ३२ मिनट २० सैकिण्ड है। बेलान्तर+२ मिनट ३२ सैकिण्ड है। पलभा ६-१० है।

धार्मिक उपासना में पर्व तिथियों का अपना महत्त्व होता है। पक्खी आदि का प्रतिक्रमण तिथि के आधार पर करना पड़ता है। पहले इसे 'पक्खी' के नाम से संत तैयार करते थे। उसे हर सिंघाड़े (ग्रुप) को एक-एक दे दिया जाता था, बाद में 'लघु-पंचांग' के नाम से श्री हनूतमलजी सुराणा (चूरू) छपाने लग गये। परमाराध्य गुरुदेव व आचार्यवर की दृष्टि से पिछले कई वर्षों से इसका संपादन संतों द्वारा होने लगा। 'लघु पंचांग' के बाद 'जय पंचांग' के रूप में सामने आया। सन् १९८४ से इसका संपादन मेरे द्वारा होने लगा। वर्तमान में यह **'जय-तिथि-पत्रक'** के नाम से प्रकाशित हो रहा है।

९ नवम्बर २०१६ **मुनि सुमेरमल (लाडनूं)**
तेरापंथ भवन, रोहिणी (दिल्ली)

विशेष अवगति

वर्ष के दिन–इस वर्ष मास १२, पक्ष २४, तिथि क्षय १४, तिथि वृद्धि ८, कुल दिन ३५४

गाज बीज की अस्वाध्याय नहीं–आषाढ़ कृष्णा १२, बुधवार, दिनांक २१ जून २०१७ से कार्तिक कृष्णा ४ (प्रथम), सोमवार, दिनांक २३ अक्टूबर २०१७ तक।

चंद्र ग्रहण (i) श्रावण शुक्ला १५, सोमवार, दिनांक ०७ अगस्त २०१७
(ii) माघ शुक्ला १५, बुधवार, दिनांक ३१ जनवरी २०१८

सूर्य ग्रहण–भारत में दिखाई नहीं देगा।

मलमास–(i) वर्ष प्रारंभ से वैशाख कृष्णा ३, शुक्रवार, दिनांक १४ अप्रैल २०१७ तक रहेगा। यह पिछले वर्ष चैत्र कृष्णा २, मंगलवार, दिनांक १४ मार्च २०१७ से प्रारंभ हो चुका था।
(ii) पौष कृष्णा १३, शुक्रवार, दिनांक १५ दिसम्बर २०१७ से प्रारंभ, माघ कृष्णा १३, रविवार, दिनांक १४ जनवरी २०१८ को संपन्न।
(iii) चैत्र कृष्णा १२, बुधवार, दिनांक १४ मार्च २०१८ से प्रारंभ, अगले वर्ष में चलेगा।

तारा–(१) गुरु अस्त–कार्तिक कृष्णा ११, रविवार, दिनांक १५ अक्टूबर २०१७ को प्रारंभ, मार्गशीर्ष कृष्णा १/२, रविवार, दिनांक ५ नवम्बर २०१७ को संपन्न।
(२) शुक्र अस्त–पौष कृष्णा १३, शनिवार, दिनांक १६ दिसम्बर २०१७ को प्रारम्भ, फाल्गुन कृष्णा १, गुरुवार, दिनांक १ फरवरी २०१८ को सम्पन्न।

नोट–ग्रहण, मलमास तथा गुरु, शुक्र के अस्तकाल में विशिष्ट शुभ कार्य वर्जनीय है।

विशेष ज्ञातव्य

(क) विशेष मुहूर्त्त

(१) अभिजित मुहूर्त्त, (२) रवियोग, (३) अमृत का चौघड़िया

(४) दीपावली का प्रदोषकाल (सूर्यास्त से दो घड़ी-४८ मिनट तक)

(५) पुष्य नक्षत्र के साथ रविवार या गुरुवार सदा श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु-पुष्य विवाह में वर्जित है।

(ख) यात्रा के लिए आवश्यक

(१) यात्रा-कर्ता की जन्म-राशि से यात्रा दिन का चंद्रमा चौथे, आठवें में स्थित न हो। पंचांग में घातचक्र में दिये गये चंद्रमा को भी टालें। (जन्म-राशि ज्ञात न होने से प्रचलित नाम राशि)।

(२) यात्रा के समय सम्मुख चंद्रमा हो तो सब दोष नष्ट माने जाते हैं। पूर्व दिशा में जाने के लिए मेष, सिंह, धन का चंद्रमा, पश्चिम में मिथुन, तुला और कुंभ का, दक्षिण में वृष, कन्या, मकर का और उत्तर में कर्क, वृश्चिक और मीन का चंद्रमा सम्मुख रहता है। दाहिना चंद्रमा भी शुभ है।

(३) यात्रा-योग न मिलने पर अमृत का चौघड़िया अथवा अभिजित मुहूर्त्त सदैव ग्राह्य है। बुधवार को अभिजित शुभ नहीं।

(४) राहू काल-कुवेला का समय वर्जनीय है।

(५) मृत्यु योग आदि अशुभ योग वर्जनीय है।

(ग) यात्रा के लिए अन्य ज्ञातव्य

(१) सोमवार और शनिवार को पूर्व में, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में, मंगलवार और बुधवार को उत्तर में तथा गुरुवार को दक्षिण में यात्रा न करें, क्योंकि दिशाशूल रहता है।

(२) उषाकाल में पूर्व में, गोधूलिकाल में पश्चिम में, मध्याह्न में दक्षिण में तथा मध्य रात्रि में उत्तर में यात्रा न करें, क्योंकि समयशूल रहता है।

(३) ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्व को, पूर्वाभाद्रपद में दक्षिण को, रोहिणी में पश्चिम को तथा उत्तराफाल्गुनी में उत्तर को यात्रा न करें, क्योंकि नक्षत्र-शूल रहता है।

(४) धनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती को पंचक कहते हैं। इन दिनों में दक्षिण की ओर यात्रा वर्जनीय है।

(५) तिथियां ४,६,८,९,१२,१४,३० और शुक्ल पक्ष की एकम यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(६) भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(७) अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती यात्रा में विशेष शुभ नक्षत्र माने जाते हैं।

(८) उत्तर में २,१०; दक्षिण में ५,१३; पूर्व में १,९; पश्चिम में ६,१४ तिथियों में योगिनी रहती है। योगिनी के सामने या दाहिने होने पर यात्रा वर्जनीय है।

(९) पूर्व में शनिवार को, पश्चिम में मंगलवार को, उत्तर में रविवार को

तथा दक्षिण में गुरुवार को यात्रा का निषेध है क्योंकि काल-राहू सम्मुख रहता है।

(१०) शनिवार और बुधवार को ईशान कोण (पूर्वोत्तर) में, मंगलवार को वायव्य (पश्चिमोत्तर) में, रविवार, शुक्रवार को नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) में तथा सोमवार, गुरुवार को आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में विदिशाशूल है अतः यात्रा में वर्जनीय है।

दिशा-शूल परिहार–रवि को तांबूल, सोम को चंदन, मंगल को मट्ठा, बुध को पुष्प, गुरु को दही, शुक्र को घृत व शनि को तिल खाकर या देकर यात्रा करने में दिक्शूल-दोष मिटता है।

शकुन–यात्रा के समय लोहा, तेल, घास, मट्ठा, पत्थर, लकड़ी, बिलाव मिले तो अशुभ व दही, चावल, चांदी का घड़ा, पुष्प, हंस तथा मुर्दा शुभ है।

सुयोग के सामने सभी कुयोगों का नाश

इक्कस्स भए पंचाणणस्स, भज्जंति गय सय सहस्सा।

तह रवि जोग पणट्ठा, गयणम्मि गहा न दीसंति ।। यति वल्लभ ।।

एक शेर के सामने लाख हाथी भी भाग जाते हैं। एक सूर्य के आने पर आकाश में एक भी ग्रह नहीं दीखता। इसी तरह रवि योग होने पर अन्य अप्योग स्वतः अप्रभावी बन जाते हैं।

रवियोगे राजयोगे, कुमारयोगे असुद्ध दिहए वि।

जं सुह कज्जं कीरइ, तं सव्वं बहुफलं होइ ।। यतिवल्लभ ।।

अशुभ दिन में भी रवियोग, राजयोग व कुमारयोग होने पर जो भी शुभ कार्य किया जाये तो वह बहुत फलदायी होता है।

सिद्धियोगः कुयोगश्च, जायेतां युगपद्यदि।

कुयोगं तत्र निर्जित्य, सिद्धि योगो विजृम्भते ।। आरंभ सिद्धि ।।

सिद्धियोग व कुयोग यदि एक साथ हो तो कुयोग का फल नष्ट हो जाता है।

(घ) यात्रा-निवृत्ति पर प्रवेश मुहूर्त्त

शुभ नक्षत्र–अनु., चि., मृ., तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, ह., ध.।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

आजकल नक्षत्र चंद्रमा के अनुकूल होने पर रवि को भी प्रवेश करते हैं।

शुभ-तिथि–२,३,५,७,१०,११,१३,१५।

नोट : एक ही दिन में यात्रा और प्रवेश हो तो मात्र प्रवेश देखा जाए।

(च) दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त्त

शुभ मास–वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

शुभ नक्षत्र–तीनों उत्तरा,अश्वि,रो.,रे.,अनु.,पुष्य.,स्वा.,पुन,श्र.ध., श.,मू.।

शुभ वार–रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ तिथि–२,३,५,७,१०,११,१३ शुक्ल पक्ष में; २,३,५ कृष्ण पक्ष में।

तीर्थंकरों के दीक्षा-कल्याणक दिन, नक्षत्र भी लिए जा सकते हैं।

नोट : गुरु अस्त न हो, अधिक मास व तिथि न हो।

(छ) विद्यारंभ आदि

शुभ तिथि–२,३,५,६,१०,११,१२ कृष्ण पक्ष २,३,५।

शुभ वार–बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–मू, आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, मृ, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, ध, श, तीनों पूर्वा।

नोट : सोमवार, मंगलवार, शनिवार को आरंभ किया हुआ कोई भी साहित्य सृजन, शोध-कार्य आदि सफलता का सूचक नहीं होता। जैन विद्या का सत्रारंभ रवि और शुक्र को श्रेष्ठ रहता है।

साहित्य-सृजन में आर्द्रा, पुनः, पुष्य, रे, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, अनु, नक्षत्र उत्तम माने गये हैं, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

(ज) जन्म के पाये

आर्द्रा नक्षत्र से १० नक्षत्र तक चांदी का, विशाखा नक्षत्र से ४ नक्षत्र तक लोहे का, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र से ६ नक्षत्र तक तांबे का तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र से ७ नक्षत्र तक सोने का पाया होता है।

प्रकारान्तर से जन्म-नक्षत्र के कालमान को समान चार भागों में बांट लिया जाता है। प्रथम भाग में जन्म होने से सोने का पाया, द्वितीय भाग में होने से चांदी का पाया, तृतीय भाग में होने से तांबे का पाया और चौथे भाग में होने से लोहे का पाया मानते हैं।

लग्न और चंद्रमा से भी पाया देखा जाता है। जन्म-कुंडली में लग्न से पहला, छठा, ग्यारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो सोने का पाया, लग्न से दूसरा, पांचवां तथा नौवां चंद्रमा पड़ा हो तो चांदी का पाया, लग्न से तीसरा, सातवां व दसवां चंद्रमा पड़ा हो तो तांबे का पाया मानते हैं। जन्म से चौथा, आठवां व बारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो लोहे का पाया मानते हैं। सोना एवं लोहे का पाया कष्टप्रद तथा चांदी व तांबे का पाया श्रेष्ठ माने जाते हैं।

अधिकांश ज्योतिषियों के मतानुसार लग्न और चंद्रमा से देखा गया पाया ही मान्य होता है। पूरे देश में प्रायः इसी का प्रचलन है।

(झ) वार संज्ञक नक्षत्र

आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा और मघा—ये वार संज्ञक नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में जन्म होने पर जातक का जन्म वारों में हुआ माना जाता है। इनमें उत्पन्न बच्चों का प्रायः वही नक्षत्र आने से नामकरण होता है। ज्येष्ठा की अंतिम चार घड़ी तथा मूल की पहली चार घड़ी अभुक्त मूल मानी जाती है जो कष्टदायक है। मूल के प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए, दूसरे में माता के लिए, तीसरे में आर्थिक पक्ष के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। मूल का चौथा चरण शुभ माना जाता है। इसके विपरीत आश्लेषा का प्रथम चरण शुभ माना जाता है। दूसरा धन के लिए, तीसरा माता के लिए तथा चौथा पिता के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। इसी प्रकार ज्येष्ठा का प्रथम बड़े भाई के लिए, दूसरा छोटे भाई के लिए, तीसरा माता के लिए और चौथा स्वयं बालक के लिए अनिष्टकारक माना जाता है।

(ट) ग्रहण

सब जगह एक साथ ग्रहण नहीं लगता, इस कारण उसका समय नहीं दिया जाता है। जो ग्रहण जहां नहीं दिखता, उस ग्रहण की अस्वाध्याय आदि रखने की जरूरत नहीं है।

संवत् २०७४ के विशेष पर्व-दिवस

१.	२५८वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी	चैत्र शुक्ला-९	५ अप्रैल २०१७	बुधवार
२.	२६१६वीं महावीर जयन्ती (महावीर जन्म कल्याणक दिवस)	चैत्र शुक्ला-१३	९ अप्रैल २०१७	रविवार
३.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का आठवां महाप्रयाण दिवस	वैशाख कृष्णा-११	२२ अप्रैल २०१७	शनिवार
४.	अक्षय तृतीया	वैशाख शुक्ला-३/४	२९ अप्रैल २०१७	शनिवार
५.	आचार्यश्री महाश्रमण का ५६वां जन्म दिवस	वैशाख शुक्ला-९	४ मई २०१७	गुरुवार
६.	आचार्यश्री महाश्रमण का आठवां पदाभिषेक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	५ मई २०१७	शुक्रवार
७.	भगवान् महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	५ मई २०१७	शुक्रवार
८.	आचार्यश्री महाश्रमण का ४४वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)	वैशाख शुक्ला-१४	९ मई २०१७	मंगलवार
९.	आचार्यश्री तुलसी का २१वां महाप्रयाण दिवस	आषाढ़ कृष्णा-३	१२ जून २०१७	सोमवार
१०.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९८वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)	आषाढ़ कृष्णा-१३	२२ जून २०१७	गुरुवार
११.	आचार्य भिक्षु का २९२वां जन्म दिवस एवं २६०वां बोधि दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१३	६ जुलाई २०१७	गुरुवार
१२.	चातुर्मासिक पक्खी	आषाढ़ शुक्ला-१४ (द्वि)	८ जुलाई २०१७	शनिवार
१३.	२५८वां तेरापंथ स्थापना दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१५	९ जुलाई २०१७	रविवार
१४.	७१वां स्वतंत्रता दिवस	भाद्रपद कृष्णा-८	१५ अगस्त २०१७	मंगलवार
१५.	श्रीमज्जयाचार्य का १३६वां निर्वाण दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२/१३	१९ अगस्त २०१७	शनिवार
१६.	पर्युषण प्रारंभ दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२/१३	१९ अगस्त २०१७	शनिवार
१७.	पर्युषण पक्खी	भाद्रपद कृष्णा-१५	२१ अगस्त २०१७	सोमवार
१८.	संवत्सरी महापर्व	भाद्रपद शुक्ला-५	२६ अगस्त २०१७	शनिवार
१९.	कालूगणी का ८१वां स्वर्गवास दिवस	भाद्रपद शुक्ला-६	२७ अगस्त २०१७	रविवार
२०.	२४वां विकास महोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-९	३० अगस्त २०१७	बुधवार
२१.	२१५वां भिक्षु चरमोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-१३	४ सितम्बर २०१७	सोमवार
२२.	दीपावली	कार्तिक कृष्णा-३०	१९ अक्टूबर २०१७	गुरुवार

२३.	भगवान् महावीर का २५४४वां निर्वाण कल्याणक दिवस	कार्तिक कृष्णा-३०	१९ अक्टूबर २०१७	गुरुवार
२४.	आचार्यश्री तुलसी का १०४वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)	कार्तिक शुक्ला-२	२१ अक्टूबर २०१७	शनिवार
२५.	चातुर्मासिक पक्खी	कार्तिक शुक्ला-१४	३ नवम्बर २०१७	शुक्रवार
२६.	भगवान् महावीर का २५८६वां दीक्षा कल्याणक दिवस	मार्गशीर्ष कृष्णा-१०	१३ नवम्बर २०१७	सोमवार
२७.	भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस	पौष कृष्णा-१०	१२ दिसम्बर २०१७	मंगलवार
२८.	१५४वां मर्यादा महोत्सव	माघ शुक्ला-७	२४ जनवरी २०१८	बुधवार
२८.	६९वां गणतंत्र दिवस	माघ शुक्ला-९	२६ जनवरी २०१८	शुक्रवार
३०.	होलिका	फाल्गुन शुक्ला-१४/१५	१ मार्च २०१८	गुरुवार
३१.	चातुर्मासिक पक्खी	फाल्गुन शुक्ला-१४/१५	१ मार्च २०१८	गुरुवार
३२.	भगवान् ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस (वर्षीतप प्रारंभ)	चैत्र कृष्णा-८	९ मार्च २०१८	शुक्रवार

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित होने वाले वार्षिक महत्त्वपूर्ण आयोजन

कार्यक्रम	स्थान	दिनांक	संपर्क सूत्र
महावीर जयन्ती	पावापुरी (बिहार)	9 अप्रैल 2017	7044448888
अक्षय तृतीया	भागलपुर (बिहार)	29 अप्रैल 2017	9709432000
सन् 2017 का चातुर्मास (वि.सं.2074)	कोलकाता (प. बंगाल)	9 जुलाई - 3 नवम्बर 2017 (चातुर्मासकाल)	8820172017
154वां मर्यादा महोत्सव	कटक (उड़ीसा)	24 जनवरी 2018	9337267213

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२९	बु	२	०२	४८	रे	११	३९	६.२९	६.४५	९.३३	३.०४	मेष ११/३९	पं. ११/३९ तक, मृ. ११/३९ से, वै. १४/४६ से
३०	गु	३	२३	४४	अ	०९	२५	६.२८	६.४५	९.३२	३.०४	मेष	र. ०९/२५ से, वै. ११/०८ तक,
३१	शु	४	२०	४३	भ / कृ	०७ / ०४	०७ / ५४	६.२७	६.४५	९.३१	३.०४	वृष १२/३३	र. ०७/०७ तक, भ. १०/१३ से २०/४३ तक, सूर्य रेवती में १२/४२ से, र. १२/४२ से ०४/५४ तक, कु. और यम. ०४/५४ से
१	श	५	१७	५१	रो	०२	५५	६.२६	६.४६	९.३१	३.०५	वृष	अ. ०२/५५ तक (प्रयाणे वर्ज्य), र. ०२/५५ से
२	र	६	१५	१८	मृ	०१	१६	६.२५	६.४६	९.३०	३.०५	मि. १४/०३	राज. १५/१८ से ०१/१६ तक, र. ०१/१६ तक
३	सो	७	१३	०७	आ	२४	०१	६.२४	६.४६	९.२९	३.०५	मिथुन	भ. १३/०७ से २४/१२ तक
४	मं	८	११	२३	पुन	२३	१४	६.२३	६.४७	९.२९	३.०६	कर्क १७/२२	र. २३/१४ से
५	बु	९	१०	०६	पु	२२	५४	६.२२	६.४७	९.२८	३.०६	कर्क	र. अहोरात्र, ज्वा. २२/५४ से, **श्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, श्री रामनवमी**
६	गु	१०	०९	१८	आ	२३	०२	६.२१	६.४७	९.२७	३.०६	सिंह २३/०२	ज्वा. ०९/१८ तक, भ. २१/०४ से, र. २३/०२ तक
७	शु	११	०८	५७	म	२३	३६	६.१९	६.४८	९.२६	३.०७	सिंह	कु. ०८/५७ तक, भ. ०८/५७ तक, राज. और सि. २३/३६ से
८	श	१२	०९	०२	पू.फा.	२४	३४	६.१८	६.४८	९.२५	३.०७	सिंह	र. २४/३४ से
९	र	१३	०९	३२	उ.फा.	०१	५६	६.१७	६.४८	९.२५	३.०८	क. ०६/५२	र. ०१/५६ तक, अ. ०१/५६ से, **२६१६वीं महावीर जयंती**
१०	सो	१४	१०	२५	ह	०३	३९	६.१६	६.४९	९.२४	३.०८	कन्या	भ. १०/२५ से २३/०० तक, व्या. ०८/५६ से
११	मं	१५	११	४०	चि	०५	४३	६.१५	६.५०	९.२४	३.०९	तुला १६/३८	राज. ११/४० तक, व्या. ०८/५० तक **पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१२	बु	१	१३	१६	स्वा	०	०	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	तुला	
१३	गु	२	१५	१२	स्वा	०८	०७	६.१३	६.५१	९.२३	३.०९	वृ. ०४/०६	सूर्य अश्विनी और मेष में ०२/०५ से, भ. ०४/१७ से, मलमास समाप्त
१४	शु	३	१७	२५	वि	१०	४८	६.१२	६.५१	९.२२	३.१०	वृश्चिक	राज. १०/४८ से १७/२५ तक, भ. १७/२५ तक, व्य. १०/०९ से
१५	श	४	१९	४९	अ	१३	४१	६.११	६.५२	९.२१	३.१०	वृश्चिक	व्य. १०/५९ तक
१६	र	५	२२	१७	ज्ये	१६	४०	६.१०	६.५२	९.२०	३.१०	धन १६/४०	सि. १६/४० से
१७	सो	६	२४	३७	मू	१९	३४	६.०९	६.५२	९.२०	३.११	धन	कु. १९/३४ तक, र. १९/३४ से, भ. २४/३७ से
१८	मं	७	०२	३८	पू.षा.	२२	११	६.०८	६.५३	९.१९	३.११	म. ०४/४७	राज. २२/११ तक, भ. १३/४१ तक, र. २२/११ तक
१९	बु	८	०४	०८	उ.षा.	२४	२०	६.०७	६.५४	९.१९	३.११	मकर	
२०	गु	९	०४	५६	श्र	०१	५१	६.०६	६.५४	९.१८	३.१२	मकर	
२१	शु	१०	०४	५६	ध	०२	३६	६.०५	६.५५	९.१७	३.१२	कुंभ १४/२०	पं. १४/२० से, भ. १७/०२ से ०४/५६ तक
२२	श	११	०४	०५	श	०२	३२	६.०४	६.५६	९.१७	३.१३	कुंभ	पं., आचार्यश्री महाप्रज्ञ का आठवां महाप्रयाण दिवस
२३	र	१२	०२	२६	पू.भा.	०१	४०	६.०३	६.५६	९.१६	३.१३	मीन १९/५८	पं., राज. ०१/४० से ०२/२६ तक
२४	सो	१३	२४	०५	उ.भा.	२४	०५	६.०२	६.५७	९.१६	३.१४	मीन	पं., भ. २४/०५ से, वै. ०७/२३ से ०४/१४ तक
२५	मं	१४	२१	०८	रे	२१	५५	६.०१	६.५८	९.१५	३.१४	मेष २१/५५	भ. १०/४० तक, पं. २१/५५ तक, अ. २१/५५ से (प्रवेशे वर्ज्य)
२६	बु	३०	१७	४७	अ	१९	२१	६.००	६.५८	९.१५	३.१४	मेष	मृ. १९/२१ तक, कु. १७/४७ से १९/२१ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२७	गु	१	१४	१०	भ	१६	३२	५.५९	६.५९	९.१४	३.१५	वृष २१/४९	यम. १६/३२ से, सूर्य भरणी में १७/५४ से
२८	शु	२	१०	३१	कृ	१३	४१	५.५८	७.००	९.१४	३.१५	वृष	यम. १३/४१ से
२९	श	३ / ४	०७ / ०३	५७ / ४१	रो	१०	१३	५.५७	७.००	९.१३	३.१६	मि. २१/४४	अ. १०/५८ तक (प्रयाणे वर्ज्य), र. १०/५८ से, भ. १७/१६ से ०३/४१ तक, अक्षय तृतीया
३०	र	५	२४	५२	मृ	०८	३५	५.५७	७.०१	९.१३	३.१६	मिथुन	र. ०८/३५ तक
१	सो	६	२२	३५	आ / पुन	०६ / ०५	३९ / १७	५.५६	७.०१	९.१३	३.१६	कर्क २३/३५	कु. ०६/३९ से २२/३५ तक, र. ०६/३९ से ०५/१७ तक
२	मं	७	२०	५४	पु	०४	३४	५.५५	७.०२	९.१२	३.१६	कर्क	रा. २०/५४ तक, भ. २०/५४ से
३	बु	८	१९	५४	आ	०४	३०	५.५४	७.०२	९.११	३.१७	सिंह ०४/३०	भ. ०८/१९ तक, र. ०४/३० से
४	गु	९	१९	३२	म	०५	०३	५.५३	७.०३	९.१०	३.१७	सिंह	र. अहोरात्र, आचार्यश्री महाश्रमण का ५६वां जन्म दिवस
५	शु	१०	१९	४६	पू.फा.	०६	०९	५.५२	७.०३	९.१०	३.१८	सिंह	सि. ०६/०९ तक, र. ०६/०९ तक, व्या. १५/४० से, भगवान् महावीर केवलज्ञान दिवस, आचार्यश्री महाश्रमण का आठवां पदाभिषेक दिवस
६	श	११	२०	३२	उ.फा.	०	०	५.५१	७.०४	९.०९	३.१८	क. १२/३२	भ. ०८/०६ से २०/३२ तक, व्या. १५/१० तक
७	र	१२	२१	४४	उ.फा.	०७	४६	५.५१	७.०४	९.०९	३.१८	कन्या	अ. ०७/४६ से
८	सो	१३	२३	१८	ह	०९	४५	५.५०	७.०५	९.०९	३.१९	तुला २२/५२	र. ०९/४५ से
९	मं	१४	०१	०९	चि.	१२	०३	५.५०	७.०६	९.०९	३.१९	तुला	र. १२/०३ तक, भ. ०१/०९ से, व्य. १५/३७ से, आचार्यश्री महाश्रमण का ४४वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)
१०	बु	१५	०३	१४	स्वा	१४	३६	५.४९	७.०७	९.०९	३.१९	तुला	भ. १४/१० तक, कु. ०३/१४ से, व्य. १६/११ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
११	गु	१	०५	३०	वि	१७	२०	५.४९	७.०८	९.०९	३.२०	वृ. १०/३८	सूर्य कृतिका में १२/०४ से
१२	शु	२	०	०	अ	२०	१४	५.४८	७.०८	९.०९	३.२०	वृश्चिक	राज. २०/१४ तक
१३	श	२	०७	५३	ज्ये	२३	१२	५.४७	७.०९	९.०८	३.२०	धन २३/१२	भ. २१/०६ से
१४	र	३	१०	१८	मू	०२	०९	५.४७	७.१०	९.०७	३.२१	धन	सि. ०२/०९ तक, भ. १०/१८ तक, सूर्य वृषभ में २२/५८ से
१५	सो	४	१२	४०	पू.षा.	०४	५७	५.४६	७.१०	९.०७	३.२१	धन	मृ. ०४/५७ से
१६	मं	५	१४	४८	उ.षा.	०	०	५.४६	७.१०	९.०७	३.२१	म. ३१/३६	
१७	बु	६	१६	३३	उ.षा.	०७	२६	५.४५	७.१०	९.०६	३.२१	मकर	र. ०७/२६ से, कु. ०७/२६ से १६/३३ तक, भ. १६/३३ से ०५/१३ तक
१८	गु	७	१७	४४	श्र	०९	२६	५.४४	७.११	९.०६	३.२२	कुंभ २२/१२	र. ०९/२६ तक, पं. २२/१२ से
१९	शु	८	१८	१२	ध	१०	४८	५.४४	७.१२	९.०६	३.२२	कुंभ	पं., वै. २०/३९ से
२०	श	९	१७	५३	श	११	२४	५.४३	७.१२	९.०५	३.२२	मीन ०५/२०	पं., भ. ०५/२४ से, वै. १९/१७ तक
२१	र	१०	१६	४३	पू.भा.	११	११	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	मीन	पं., भ. १६/४३ तक
२२	सो	११	१४	४४	उ.भा.	१०	०९	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	मीन	पं.
२३	मं	१२	१२	०३	रे/अ	०८/०६	२४/०३	५.४२	७.१४	९.०५	३.२३	मेष ०८/२४	पं. ०८/२४ तक, अ. ०८/२४ से ०६/०३ तक
२४	बु	१३/१४	०८/०५	४८/०९	भ	०३	१५	५.४२	७.१५	९.०५	३.२३	मेष	भ. ०८/४८ से १९/०१ तक, सि. ०३/१५ से
२५	गु	३०	०१	१५	कृ	२४	१२	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	वृष ०८/३०	सूर्य रोहिणी में ०८/१७ से, यम. २४/१२ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२६	शु	१	२१	२०	रो	२१	०६	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	वृष	कु. और यम. २१/०६ तक, राज. २१/०६ से
२७	श	२	१७	३३	मृ	१८	०९	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	मि. ०७/३५	
२८	र	३	१४	०७	आ	१५	३२	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	मिथुन	र. १५/३२ से
२९	सो	४	११	१०	पुन	१३	२७	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	कर्क ०७/५५	भ. ११/१० तक, कु. ११/१० से १३/२७ तक, र. १३/२७ तक
३०	मं	५	०८	५०	पु	१२	००	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	कर्क	र. १२/०० से, व्या. ०१/३६ से
३१	बु	६	०७	१३	आ	११	१६	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	सिंह ११/१६	र. ११/१६ तक, व्या. २३/४२ तक
१	गु	७	०६	२२	म	११	१७	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	सिह	भ. ०६/२२ से १८/१४ तक
२	शु	८	०६	१६	पू.फा.	१२	०३	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	क. १८/२०	सि. १२/०३ तक, र. १२/०३ से
३	श	९	०६	५३	उ.फा.	१३	२८	५.३९	७.१८	९.०४	३.२५	कन्या	र. अहोरात्र, मृ. और यम. १३/२८ से, व्य. २१/३३ से
४	र	१०	०८	०५	ह	१५	२६	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	तुला ०४/३४	अ. १५/२६ तक, र. १५/२६ तक, भ. २०/५२ से, व्य. २१/४४ तक
५	सो	११	०९	४५	चि	१७	४८	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	तुला	भ. ०९/४५ तक
६	मं	१२	११	४५	स्वा	२०	२९	५.३९	७.२०	९.०४	३.२५	तुला	र. २०/२९ से
७	बु	१३	१३	५८	वि	२३	१९	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	वृ. १६/३६	र. २३/१९ तक, अ. २३/१९ से
८	गु	१४	१६	१८	अ	०२	१५	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	वृश्चिक	सूर्य मृगशीर्ष में ०६/०७ से, र. ०६/०७ से ०२/१५ तक, भ. १६/१८ से ०५/२९ तक
९	शु	१५	१८	४१	ज्ये	०५	१२	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	धन ०५/१२	कु. ०५/१२ से, ज्वा. ०५/१२ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१०	श	१	२१	०२	मू	०	०	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	धन	ज्वा. २१/०२ तक
११	र	२	२३	१६	मू	०८	०६	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	धन	सि. ०८/०६ तक, राज. ०८/०६ से
१२	सो	३	०१	१९	पू.षा.	१०	५१	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	म. १७/३१	मृ. १०/५१ से, भ. १२/१९ से ०१/१९ तक, आचार्यश्री तुलसी का २१वां महाप्रयाण दिवस
१३	मं	४	०३	०४	उ.षा.	१३	२३	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	मकर	कु. ०३/०४ से, वै. ०४/३० से
१४	बु	५	०४	२३	श्र	१५	३३	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	कुंभ ०४/२९	कु. १५/३३ तक, पं. ०४/२९ से, सूर्य मिथुन में ०५/३३ से, वै. ०४/३३ तक
१५	गु	६	०५	१०	ध	१७	१६	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	कुंभ	पं., र. १७/१६ से, भ. ०५/१० से
१६	शु	७	०५	१७	श	१८	२३	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	कुंभ	पं., भ. १७/१८ तक, र. १८/२३ तक
१७	श	८	०४	३९	पू.भा.	१८	४८	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	मीन १२/४५	पं.
१८	र	९	०३	१७	उ.भा.	१८	३०	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	मीन	पं.
१९	सो	१०	०१	१२	रे	१७	२७	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	मेष १७/२७	भ. १४/२० से ०१/१२ तक, पं. १७/२७ तक, कु. १७/२७ से
२०	मं	११	२२	२९	अ	१५	४४	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	मेष	अ. १५/४४ तक (प्रवेशे वर्ज्य), कु. १५/४४ तक, राज. २२/२९ से
२१	बु	१२	१९	१५	भ.	१३	२७	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	वृष १८/४९	राज. १३/२७ तक, सि. १३/२७ से, सूर्य आर्द्रा में ०५/०९ से, गाजबीज की अस्वाध्याय नहीं
२२	गु	१३	१५	३९	कृ	१०	४६	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	वृष	यम. १०/४६ तक, भ. १५/३९ से ०१/४६ तक, आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९८वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)
२३	शु	१४	११	५१	रो / मृ	०७ / ०४	५० / ५०	५.४०	७.२७	९.०७	३.२७	मि. १८/२०	यम. ०७/५० तक, पक्खी
२४	श	३० / १	०८ / ०४	०२ / २२	आ	०१	५९	५.४१	७.२७	९.०८	३.२७	मिथुन	

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२५	र	२	०१	०४	पुन	२३	२७	५.४१	७.२७	९.०८	३.२७	कर्क १८/०२	राज. २३/२७ से, व्या. १७/५९ से
२६	सो	३	२२	१५	पु	२१	२५	५.४२	७.२७	९.०८	३.२६	कर्क	र. २१/२५ से, व्या. १४/२७ तक
२७	मं	४	२०	०३	आ	२०	००	५.४२	७.२७	९.०८	३.२६	सिंह २०/००	भ. ०९/०४ से २०/०३ तक, र. २०/०० तक, कु. २०/०३ से
२८	बु	५	१८	३५	म	१९	१९	५.४३	७.२७	९.०९	३.२६	सिंह	कु. १९/१९ तक, १९/१९ से
२९	गु	६	१७	५५	पू.फा.	१९	२५	५.४३	७.२७	९.०९	३.२६	क. ०१/३४	र. १९/२५ तक, व्य. ०७/०७ से ०५/५४ तक
३०	शु	७	१८	०२	उ.फा.	२०	१८	५.४४	७.२७	९.१०	३.२६	कन्या	भ. १८/०२ से
१	श	८	१८	५३	ह	२१	५२	५.४४	७.२७	९.१०	३.२६	कन्या	भ. ०६/२३ तक, मृ और यम. २१/५२ तक, र. २१/५२ से
२	र	९	२०	२१	चि	२४	०२	५.४५	७.२७	९.११	३.२५	तुला १०/५३	र. अहोरात्र
३	सो	१०	२२	१७	स्वा	०२	३७	५.४५	७.२७	९.११	३.२५	तुला	र. ०२/३७ तक, कु. ०२/३७ से, यम. ०२/३७ से
४	मं	११	२४	३१	वि	०५	२८	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	वृ. २२/४४	भ. ११/२२ से २४/३१ तक, कु. २४/३१ तक, राज. ०५/२८ से
५	बु	१२	०२	५३	अ	०	०	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	वृश्चिक	अ. अहोरात्र, राज. ०२/५३ तक, सूर्य पुनर्वसु में ०४/४० से
६	गु	१३	०५	१६	अ	०८	२५	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	वृश्चिक	आचार्यश्री भिक्षु का २९२वां जन्म दिवस एवं २६०वां बोधि दिवस
७	शु	१४	०	०	ज्ये	११	२२	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	धन ११/२२	र. ११/२२ से
८	श	१४	०७	३२	मू	१४	११	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	धन	भ. ०७/३२ से २०/३७ तक, र. १४/११ तक, चातुर्मासिक पक्खी
९	र	१५	०९	३७	पू.षा.	१६	४९	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	म. २३/२५	राज. ०७/३७ तक, वै. १०/४० से, २५८वां तेरापंथ स्थापना दिवस

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१०	सो	१	११	२७	उ.षा.	१९	१०	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मकर	मृ. १९/१० तक, सि. १९/१० से, वै. ११/०९ तक
११	मं	२	१२	५७	श्र	२१	११	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मकर	राज. २१/११ से, भ. ०१/३४ से
१२	बु	३	१४	०५	ध	२२	४९	५.४७	७.२६	९.१२	३.२५	कुंभ १०/०३	पं. १०/०३ से, भ. और राज. १४/०५ तक
१३	गु	४	१४	४६	श	२४	००	५.४७	७.२६	९.१२	३.२४	कुंभ	पं.
१४	शु	५	१४	५७	पू.भा.	२४	४१	५.४७	७.२५	९.१२	३.२४	मीन १८/३४	पं., कु. २४/४१ तक, र. २४/४१ से
१५	श	६	१४	३५	उ.भा.	२४	४८	५.४८	७.२५	९.१२	३.२४	मीन	पं., भ. १४/३५ से ०२/१० तक, र. २४/४८ तक
१६	र	७	१३	३७	रे	२४	२०	५.४९	७.२५	९.१३	३.२४	मेष २४/२०	सूर्य कर्क में १६/२५ से, पं. २४/२० तक
१७	सो	८	१२	०५	अ	२३	१८	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	मेष	
१८	मं	९	१०	००	भ	२१	४५	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	वृष ०३/१८	भ. २०/४७ से
१९	बु	१०/११	०७/०४	२६/२८	कृ	१९	४५	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	वृष	सि. १९/४५ तक, भ. ०७/२६ तक, कु. १९/४५ से ०४/२८ तक, सूर्य पुष्य में ०४/१५ से
२०	गु	१२	०१	१४	रो	१७	२६	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	मि. ०४/११	मृ. १७/२६ से
२१	शु	१३	२१	५१	मृ	१४	५४	५.५२	७.२४	९.१५	३.२३	मिथुन	भ. २१/५१ से, व्या. १२/५० से
२२	श	१४	१८	२९	आ	१२	२१	५.५२	७.२३	९.१५	३.२३	कर्क ०४/३०	भ. ०८/०९ तक, व्या. ०८/५८ तक
२३	र	३०	१५	१७	पुन	०९	५५	५.५३	७.२३	९.१५	३.२३	कर्क	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२४	सो	१	१२	२५	पू / आ	०७ / ०६	४५ / ०२	५.५३	७.२२	९.१५	३.२२	सिंह ०६/०२	व्य. २२/२५ से
२५	मं	२	१०	००	म	०४	५३	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	सिंह	र. और राज. ०४/५३ से, व्य. १९/३५ तक
२६	बु	३	०८	११	पू.फा.	०४	२५	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	सिंह	राज. ०८/११ तक, भ. १९/३१ से, र. ०४/२५ तक
२७	गु	४	०७	०३	उ.फा.	०४	४१	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	क. १०/२६	भ. ०७/०३ तक, र. ०४/४१ से
२८	शु	५	०६	४०	ह	०५	४२	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	कन्या	कु. ०५/४२ तक, र. ०५/४२ तक
२९	श	६	०७	०३	चि	०	०	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	तुला १८/२८	
३०	र	७	०८	०८	चि	०७	२४	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	तुला	राज. ०७/२४ तक, भद्रा ०८/०८ से २०/५५ तक
३१	सो	८	०९	४९	स्वा	०९	४१	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	वृ. ०५/४०	र. ०९/४१ से, यम. ०९/४१ से
१	मं	९	११	५५	वि	१२	२२	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	वृश्चिक	र. अहोरात्र, कु. ११/५५ से १२/२२ तक
२	बु	१०	१४	१५	अ	१५	१७	५.५८	७.१७	९.१८	३.२०	वृश्चिक	अ. १५/१७ तक, र. १५/१७ तक, सूर्य आश्लेषा में ०३/०४ से, र. ०३/०४ से, भ. ०३/२७ से
३	गु	११	१६	३८	ज्ये	१८	१४	५.५९	७.१७	९.१८	३.१९	धन १८/१४	भ. १६/३८ तक, र. १८/१४ तक, वै. १७/०७ से
४	शु	१२	१८	५३	मू	२१	०३	५.५९	७.१६	९.१८	३.१९	धन	वै. १७/५७ तक
५	श	१३	२०	५२	पू.षा.	२३	३५	६.००	७.१५	९.१९	३.१९	म. ०६/११	र. २३/३५ से
६	र	१४	२२	२९	उ.षा	०१	४७	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	मकर	भ. २२/२९ से, र. ०१/४७ तक
७	सो	१५	२३	४१	श्र	०३	३३	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	मकर	सि. ०३/३३ तक, भ. ११/०८ तक, कु. २३/४१ से ०३/३३ तक, चन्द्रग्रहण, रक्षा बंधन, पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
८	मं	१	२४	२६	ध	०४	५४	६.०२	७.१३	९.२०	३.१८	कुंभ १६/१७	पं. १६/१७ से, राज. २४/२६ से ०४/५४ तक, मृ. ०४/५४ से
९	बु	२	२४	४३	श	०५	४७	६.०२	७.१२	९.२०	३.१७	कुंभ	पं.
१०	गु	३	२४	३४	पू.भा.	०६	१३	६.०३	७.११	९.२०	३.१७	मीन २४/०९	पं., भ. १२/४२ से २४/३४ तक
११	शु	४	२३	५८	उ.भा.	०६	१५	६.०३	७.१०	९.२०	३.१७	मीन	पं., अ. ०६/१५ से
१२	श	५	२२	५७	रे	०५	५१	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	मेष ०५/५१	पं. ५/५१ तक, र. ०५/५१ से
१३	र	६	२१	३३	अ	०५	०५	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	मेष	भ. २१/३३ से, र. ०५/०५ तक, राज. ०५/०५ से
१४	सो	७	१९	४६	भ	०३	५७	६.०५	७.०७	९.२०	३.१६	मेष	भ. ०८/४२ तक, ज्वा. ०३/५७ से
१५	मं	८	१७	४१	कृ	०२	३१	६.०५	७.०६	९.२०	३.१५	वृष ०९/३७	ज्वा. १७/४१ तक, ज्वा. ०२/३१ से, व्या. ०३/५७ से, स्वतंत्रता दिवस
१६	बु	९	१५	१९	रो	२४	५१	६.०६	७.०५	९.२१	३.१५	वृष	ज्वा. १५/१९ तक, कु. १५/१९ से २४/५१ तक, सूर्य मघा और सिंह में २४/४८ से, भ. ०२/०३ से, व्या. २४/५१ तक
१७	गु	१०	१२	४४	मृ	२३	००	६.०६	७.०४	९.२१	३.१४	मि. ११/५७	मृ. २३/०० तक, भ. १२/४४ तक
१८	शु	११	१०	०३	आ	२१	०५	६.०७	७.०३	९.२१	३.१४	मिथुन	
१९	श	१२/१३	०७/०४	१९/३९	पुन	१९	१०	६.०७	७.०२	९.२१	३.१४	कर्क १३/३८	भ. ०४/३९ से, व्य. १५/०३ से, श्रीमज्जयाचार्य का १३६वां निर्वाण दिवस, पर्युषण पर्व प्रारंभ
२०	र	१४	०२	१२	पु	१७	२३	६.०७	७.०१	९.२१	३.१३	कर्क	भ. १५/२४ तक, व्य. ११/५० तक
२१	सो	३०	२४	०२	आ	१५	५३	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	सिंह १५/५३	कु. २४/०२ से पर्युषण पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२२	मं	१	२२	१८	म	१४	४५	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	सिंह	कु. १४/४५ तक, राज. २२/१८ से
२३	बु	२	२१	०५	पू.फा.	१४	०६	६.०९	६.५९	९.२१	३.१३	क. २०/२१	राज. १४/०६ तक
२४	गु	३	२०	२९	उ.फा.	१४	०२	६.०९	६.५८	९.२१	३.१२	कन्या	र. १४/०२ से
२५	शु	४	२०	३४	ह	१४	३८	६.१०	६.५७	९.२२	३.११	तुला ०३/२०	भ. ०८/२६ से २०/३४ तक, र. १४/३८ तक
२६	श	५	२१	२०	चि	१५	५३	६.११	६.५६	९.२२	३.११	तुला	र. १५/५३ से, सि. १५/५३ से, संवत्सरी महापर्व
२७	र	६	२२	४४	स्वा	१७	४६	६.११	६.५५	९.२२	३.११	तुला	र. १७/४६ तक, कालूगणी का ८१वां स्वर्गवास दिवस
२८	सो	७	२४	३८	वि	२०	११	६.१२	६.५४	९.२३	३.१०	वृ. १३/३३	यम. २०/११ तक, भ. २४/३८ से, वै. २३/४९ से
२९	मं	८	०२	५४	अ	२२	५८	६.१३	६.५३	९.२३	३.१०	वृश्चिक	भ. १३/४४ तक, र. २२/५८ से, वै. २४/३६ तक
३०	बु	९	०५	१८	ज्ये	०१	५५	६.१३	६.५२	९.२३	३.१०	धन ०१/५५	सूर्य पूर्वा फाल्गुनी में २०/४० से, र. २०/४० तक, र. ०१/५५ से, यम. ०१/५५ से, कु. ०५/१८ से, २४वां विकास महोत्सव
३१	गु	१०	०	०	मू	०४	४८	६.१४	६.५१	९.२३	३.०९	धन	र. अहोरात्र
१	शु	१०	०७	३७	पू.षा.	०	०	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	धन	र. अहोरात्र, भ. २०/४१ से
२	श	११	०९	३९	पू.षा.	०७	२५	६.१४	६.४९	९.२३	३.०९	म. १४/०१	र. ०७/२५ तक, भ. ०९/३९ तक
३	र	१२	११	१३	उ.षा.	०९	३७	६.१५	६.४८	९.२३	३.०९	मकर	
४	सो	१३	१२	१५	श्र	११	१८	६.१५	६.४७	९.२३	३.०८	कुंभ २३/५५	सि. ११/१८ तक, र. ११/१८ से, पं. २३/५५ से, २१५वां आचार्य भिक्षु चरमोत्सव दिवस,
५	मं	१४	१२	४१	ध	१२	२४	६.१५	६.४५	९.२३	३.०८	कुंभ	पं., र. १२/२४ तक, मृ. १२/२४ से, भ. १२/४१ से २४/४१ तक, पक्खी
६	बु	१५	१२	३३	श	१२	५७	६.१६	६.४४	९.२३	३.०७	कुंभ	पं., कु. १२/५७ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
७	गु	१	११	५३	पू.भा.	१२	५८	६.१६	६.४३	९.२३	३.०७	मीन ०७/०१	पं.
८	शु	२	१०	४५	उ.भा.	१२	३२	६.१७	६.४२	९.२३	३.०७	मीन	पं., राज. १२/३२ तक, अ. १२/३२ से, भ. २२/०२ से
९	श	३	०९	१४	रे	११	४३	६.१७	६.४१	९.२३	३.०६	मेष ११/४३	भ. ०९/१४ तक, पं. ११/४३ तक
१०	र	४ / ५	०७ / ०५	२६ / २५	अ	१०	३८	६.१८	६.४०	९.२३	३.०६	मेष	ज्वा. १०/३८ से ०५/२५ तक, व्या. १५/३४ से
११	सो	६	०३	१६	भ	०९	२१	६.१८	६.३९	९.२३	३.०५	वृष १५/०१	र. ०९/२१ से, भ. ०३/१६ से, व्या. १२/४७ तक
१२	मं	७	०१	०३	कृ	०७	५७	६.१८	६.३८	९.२३	३.०५	वृष	र. ०७/५७ तक, भ. १४/१० तक
१३	बु	८	२२	४९	रो / मृ	०६ / ०५	२९ / ०१	६.१८	६.३७	९.२३	३.०५	मि. १७/४५	सूर्य उत्तराफाल्गुनी में १४/३७ से, व्य. ०४/०७ से
१४	गु	९	२०	३८	आ	०३	३७	६.२०	६.३६	९.२४	३.०४	मिथुन	सि. ०३/३७ से, व्य. ०१/१४ तक
१५	शु	१०	१८	३१	पुन	०२	१८	६.२०	६.३५	९.२४	३.०३	कर्क २०/३७	कु. ०२/१८ तक, भ. ०७/३४ से १८/३१ तक
१६	श	११	१६	३२	पु	०१	०७	६.२१	६.३४	९.२४	३.०३	कर्क	सूर्य कन्या में २४/४२ से
१७	र	१२	१४	४४	आ	२४	०८	६.२१	६.३३	९.२४	३.०३	सिंह २४/०८	यम. २४/०८ से
१८	सो	१३	१३	१०	म	२३	२५	६.२१	६.३२	९.२४	३.०३	सिंह	भ. १३/१० से २४/३० तक
१९	मं	१४	११	५४	पू.फा.	२३	०२	६.२१	६.३१	९.२४	३.०३	क. ०५/००	
२०	बु	३०	११	०२	उ.फा.	२३	०५	६.२२	६.२९	९.२४	३.०२	कन्या	कु. २३/०५ से पक्ष्वी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२१	गु	१	१०	३७	ह	२३	३६	६.२२	६.२८	९.२४	३.०२	कन्या	
२२	शु	२	१०	४४	चि	२४	४०	६.२३	६.२७	९.२४	३.०२	तुला १२/०४	राज. २४/४० तक, र. २४/४० से
२३	श	३	११	२५	स्वा	०२	१७	६.२३	६.२५	९.२४	३.०१	तुला	सि. ०२/१७ तक, भ. २३/५९ से, र. ०२/१७ तक, वै. ०८/०० से
२४	र	४	१२	४२	वि	०४	२७	६.२४	६.२३	९.२४	३.००	वृ. २१/५२	भ. १२/४२ तक, र. ०४/२७ से, मृ. ०४/२७ से, वै. ०७/५२ तक
२५	सो	५	१४	३०	अ	०	०	६.२५	६.२२	९.२४	२.५९	वृश्चिक	र. अहोरात्र
२६	मं	६	१६	४२	अ	०७	०४	६.२५	६.२१	९.२४	२.५९	वृश्चिक	र. ०७/०४ तक, सूर्य हस्त में ०६/०१ से, र. ०६/०१ से
२७	बु	७	१९	१०	ज्ये	०९	५९	६.२६	६.२०	९.२४	२.५८	धन ०९/५९	र. ०९/५९ तक, यम. ०९/५९ से, भ. १९/१० से
२८	गु	८	२१	३७	मू	१२	५८	६.२६	६.१९	९.२४	२.५८	धन	भ. ०८/२५ तक
२९	शु	९	२३	५१	पू.षा.	१५	४९	६.२६	६.१८	९.२४	२.५८	म. २२/२८	र. १५/४९ से
३०	श	१०	०१	३६	उ.षा.	१८	१६	६.२७	६.१७	९.२४	२.५८	मकर	र. अहोरात्र
१	र	११	०२	४५	श्र	२०	१०	६.२७	६.१६	९.२४	२.५७	मकर	भ. १४/१६ से ०२/४५ तक, र. २०/१० तक, राज. ०२/४५ से
२	सो	१२	०३	०९	ध	२१	२२	६.२८	६.१५	९.२५	२.५७	कुंभ ०८/५१	पं. ०८/५१ से
३	मं	१३	०२	५०	श	२१	५२	६.२९	६.१३	९.२५	२.५६	कुंभ	पं., मृ. २१/५२ तक, र. २१/५२ से
४	बु	१४	०१	४८	पू.भा.	२१	३९	६.२९	६.१२	९.२५	२.५६	मीन १५/४७	पं., र. २१/३९ तक, भ. ०१/४८ से, राज. ०१/४८ से
५	गु	१५	२४	१०	उ.भा.	२०	५१	६.२९	६.११	९.२५	२.५५	मीन	पं., भ. १३/०३ तक, व्या. ०४/३९ से पक्की

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
६	शु	१	२२	०४	रे	१९	३२	६.३०	६.१०	९.२५	२.५५	मेष १९/३२	अ. १९/३२ तक, पं. १९/३२ तक, कु. १९/३२ से २२/०४ तक, व्या. ०१/४३ तक
७	श	२	१९	३८	अ	१७	५२	६.३०	६.०९	९.२५	२.५५	मेष	भ. ०६/२० से
८	र	३	१७	००	भ	१५	५९	६.३०	६.०८	९.२५	२.५४	वृष २१/३०	राज. १५/५९ तक, भ. १७/०० तक
९	सो	४	१४	१८	कृ	१४	०३	६.३१	६.०७	९.२५	२.५४	वृष	कु. १४/१८ से, व्य. १५/५५ से
१०	मं	५	११	४०	रो	१२	१०	६.३१	६.०६	९.२५	२.५४	मि. ३३/१७	कु. १२/१० तक, र. १२/१० से १९/०५ तक, सूर्य चित्रा में १९/०५ से, व्य. १२/३७ तक
११	बु	६	०९	१२	मृ	१०	२७	६.३२	६.०५	९.२५	२.५३	मिथुन	राज. ०९/१२ से १०/२७ तक, भ. ०९/१२ से २०/०३ तक, र. १०/२७ से
१२	गु	७ ८	०६ ०५	५७ ०१	आ	०८	५९	६.३२	६.०४	९.२५	२.५३	कर्क ०२/०४	र. ०८/५९ तक, सि. ०८/५९ से
१३	शु	९	०३	२३	पुन	०७	४८	६.३३	६.०३	९.२५	२.५२	कर्क	
१४	श	१०	०२	०५	पु आ	०६ ०६	५५ २२	६.३३	६.०२	९.२५	२.५२	सिंह ०६/२२	ज्वा. ०६/५५ से ०२/०५ तक, भ. १४/४२ से ०२/०५ तक
१५	र	११	०१	०७	म	०६	०८	६.३४	६.०१	९.२६	२.५२	सिंह	यम. ०६/०८ तक, राज. ०६/०८ से
१६	सो	१२	२४	२९	पू.फा.	०६	१३	६.३५	५.५९	९.२६	२.५१	सिंह	
१७	मं	१३	२४	११	उ.फा.	०	०	६.३५	५.५८	९.२६	२.५०	क. १२/१९	सूर्य तुला में १२/३७ से, भ. २४/११ से
१८	बु	१४	२४	१५	उ.फा.	०६	४०	६.३६	५.५७	९.२६	२.५०	कन्या	भ. १२/१० तक, वै. १६/५२ से
१९	गु	३०	२४	४४	ह	०७	२८	६.३७	५.५६	९.२७	२.४९	तुला २०/०१	वै. १६/०० तक, दीपावली, भगवान् महावीर का २५४४वां निर्वाण कल्याणक दिवस पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२०	शु	१	०१	३९	चि	०८	४१	६.३७	५.५५	९.२७	२.४९	तुला	
२१	श	२	०३	०२	स्वा	१०	१९	६.३८	५.५४	९.२७	२.४९	वृ. ०५/५०	सि. १०/१९ तक, आचार्यश्री तुलसी का १०४वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)
२२	र	३	०४	५३	वि	१२	२४	६.३८	५.५३	९.२७	२.४९	वृश्चिक	र. १२/२४ से, राज. १२/२४ से ०४/५३ तक, मृ. १२/२४ से
२३	सो	४	०	०	अ	१४	५५	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	वृश्चिक	र. १४/५५ तक, भ. १७/५८ से, सूर्य स्वाति में ०५/३० से, गाजबीज की अस्वाध्याय प्रारभ
२४	मं	४	०७	०८	ज्ये	१७	४६	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	धन १७/४६	भ. ०७/०८ तक, कु. १७/४६ से
२५	बु	५	०९	४०	मू	२०	५०	६.४०	५.५१	९.२८	२.४८	धन	यम. २०/५० तक, कु. २०/५० तक, र. २०/५० से
२६	गु	६	१२	१७	पू.षा.	२३	५३	६.४१	५.५१	९.२८	२.४७	म. ०६/३७	र. २३/५३ तक
२७	शु	७	१४	४६	उ.षा	०२	४२	६.४१	५.४९	९.२८	२.४७	मकर	भ. १४/४६ से ०३/५३ तक
२८	श	८	१६	५२	श्र	०५	०४	६.४२	५.४८	९.२८	२.४६	मकर	र. ०५/०४ से
२९	र	९	१८	२२	ध	०	०	६.४३	५.४८	९.२९	२.४६	कुंभ १८/००	र. अहोरात्र, पं. १८/०० से
३०	सो	१०	१९	०५	ध	०६	४५	६.४४	५.४७	९.३०	२.४६	कुंभ	पं., र. अहोरात्र
३१	मं	११	१८	५७	श	०७	३८	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	मीन ०१/४४	पं, मृ. ०७/३८ तक, र. ०७/३८ तक, भ. ०७/३८ से १८/५७ तक, कु. ०७/३८ से १८/५७ तक, व्या. १८/१५ से
१	बु	१२	१७	५८	पू.भा.	०७	४१	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	मीन	पं., राज. ०७/४१ से १७/५८ तक, व्या. १६/१९ तक
२	गु	१३	१६	१२	उ.भा./रे	०६/०५	५६/३०	६.४५	५.४५	९.३०	२.४५	मेष ०५/३०	र. ०६/५६ से ०५/३० तक, पं. ०५/३० तक
३	शु	१४	१३	४७	अ	०३	२९	६.४६	५.४४	९.३०	२.४४	मेष	भ. १३/४७ से २४/२३ तक, राज. ०३/२९ से, चातुर्मासिक पक्खी
४	श	१५	१०	५३	भ	०१	०६	६.४६	५.४३	९.३०	२.४४	वृष ०६/२९	व्या. ०७/१३ से ०३/२५ तक

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
५	र	१/२	०७/०४	४१/१९	कृ	२२	३२	६.४७	५.४३	९.३१	२.४४	वृष	
६	सो	३	०१	०१	रो	१९	५७	६.४८	५.४२	९.३२	२.४३	मि. ०६/४२	सूर्य विशाखा में १३/४१ से, भ. १४/३९ से ०१/०१ तक, अ. १९/५७ से
७	मं	४	२१	५३	मृ	१७	३१	६.४९	५.४१	९.३२	२.४३	मिथुन	यम. १७/३१ से
८	बु	५	१९	०५	आ	१५	२३	६.५०	५.४०	९.३३	२.४२	मिथुन	कु. १५/२३ से
९	गु	६	१६	४३	पुन	१३	४१	६.५१	५.४०	९.३३	२.४२	कर्क ०८/०४	सि. १३/४१ तक, गुरुपुष्यामृतयोग १३/४१ से (विवाहे वर्ज्य), र. १३/४१ से भ. १६/४३ से ०३/४४ तक
१०	शु	७	१४	५२	पु	१२	२७	६.५१	५.३९	९.३३	२.४२	कर्क	राज. १२/२७ तक, र. १२/२७ तक, मृ. १२/२७ से
११	श	८	१३	३३	आ	११	४५	६.५२	५.३९	९.३४	२.४२	सिंह ११/४५	
१२	र	९	१२	४५	म	११	३४	६.५३	५.३९	९.३४	२.४१	सिंह	यम. ११/३४ तक, भ. २४/३३ से, वै. २४/०४ से
१३	सो	१०	१२	२७	पू.फा.	११	५३	६.५३	५.३८	९.३४	२.४१	क. १८/०१	भ. १२/२७ तक, वै. २२/४९ तक, भगवान् महावीर का २५८६वां दीक्षा कल्याणक दिवस
१४	मं	११	१२	३७	उ.फा.	१२	३८	६.५४	५.३७	९.३५	२.४१	कन्या	
१५	बु	१२	१३	१३	ह	१३	४७	६.५५	५.३७	९.३६	२.४०	तुला ०२/३१	
१६	गु	१३	१४	११	चि	१५	१९	६.५६	५.३६	९.३६	२.४०	तुला	सूर्य वृश्चिक में १२/२३ से, भ. १४/११ से ०२/४९ तक
१७	शु	१४	१५	३१	स्वा	१७	१२	६.५६	५.३५	९.३६	२.४०	तुला	
१८	श	३०	१७	१३	वि	१९	२६	६.५७	५.३४	९.३६	२.३९	वृ. १२/५१	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१९	र	१	१९	१६	अ	२१	५९	६.५८	५.३४	९.३७	२.३९	वृश्चिक	मृ. २१/५९ तक, राज. १९/१६ से २१/५९ तक, सूर्य अनुराधा में १९/४१ से
२०	सो	२	२१	३८	ज्ये	२४	४९	६.५९	५.३४	९.३८	२.३९	धन २४/४९	
२१	मं	३	२४	१४	मू	०३	५२	७.००	५.३४	९.३९	२.३८	धन	र.०३/५२से
२२	बु	४	०२	५६	पू.षा.	०	०	७.०१	५.३४	९.३९	२.३८	धन	र. अहोरात्र, भ. १३/३५ से ०२/५६ तक,
२३	गु	५	०५	३६	पू.षा	०७	००	७.०२	५.३४	९.४०	२.३८	म. १३/४७	र. ०७/०० तक
२४	शु	६	०	०	उ.षा	१०	०३	७.०३	५.३४	९.४१	२.३८	मकर	र. १०/०३ से, कु. १०/०३ से
२५	श	६	०७	५८	श्र	१२	४९	७.०४	५.३४	९.४१	२.३७	कुंभ ०२/०१	र. १२/४९ तक, पं. ०२/०१ से, व्या. ०२/३९ से
२६	र	७	०९	५१	ध	१५	०४	७.०५	५.३३	९.४२	२.३७	कुंभ	पं., राज. ०९/५१ तक, भ. ९/५१ से २२/३३ तक, व्या. ०२/३६ तक
२७	सो	८	११	०३	श	१६	३८	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	कुंभ	पं., र. १६/३८ से
२८	मं	९	११	२४	पू.भा.	१७	२२	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	मीन ११/१५	पं., र. अहोरात्र, कु. ११/२४ से १७/२२ तक, सि. १७/२२ से
२९	बु	१०	१०	५१	उ.भा.	१७	१३	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	मीन	पं., र. १७/१३ तक, भ. २२/१५ से, व्य. २२/३८ से
३०	गु	११	०९	२६	रे	१६	१३	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	मेष १६/१३	भ. ०९/२६ तक, पं. १६/१३ तक, व्य. १९/५६ तक
१	शु	१२/१३	०७/०४	१३/२१	अ	१४	२८	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	मेष	र. १४/२८ से
२	श	१४	२४	५८	भ	१२	०७	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	वृष १७/२९	र. १२/०७ तक, सूर्य ज्येष्ठा में २३/५९ से, र. २३/५९ से, भ. २४/५८ से
३	र	१५	२१	१८	कृ/रो	०९/०६	२२/२२	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	वृष	र. ०९/२२ तक, भ. ११/१० तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
४	सो	१	१७	३१	मृ	०३	२१	७.०९	५.३४	९.४५	२.३६	मि. १६/५१	अ. ०३/२१ तक
५	मं	२	१३	४८	आ	२४	३०	७.१०	५.३४	९.४६	२.३६	मिथुन	यम. २४/३० तक, भ. २४/०२ से
६	बु	३	१०	२१	पुन	२१	५९	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	कर्क १६/३३	भ. १०/२१ तक
७	गु	४ / ५	०७ / ०४	१७ / ४६	पु	१९	५६	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	कर्क	गुरुपुष्यामृतयोग १९/५६ तक (विवाहे वर्ज्य)
८	शु	६	०२	५५	आ	१८	२९	७.१२	५.३४	९.४८	२.३५	सिंह १८/२९	मृ. १८/२९ तक, र. १८/२९ से, कु. १८/२९ से ०२/५५ तक, भ. ०२/५५ से, वैं. ०९/१२ से ०६/३२ तक
९	श	७	०१	४४	म	१७	४२	७.१३	५.३४	९.४८	२.३५	सिंह	भ. १४/१४ तक, र. १७/४२ तक
१०	र	८	०१	१४	पू.फा.	१७	३६	७.१४	५.३४	९.४९	२.३५	क. २३/४२	
११	सो	९	०१	२४	उ.फा.	१८	१०	७.१५	५.३४	९.५०	२.३५	कन्या	कु. ०१/२४ से
१२	मं	१०	०२	१०	ह	१९	२०	७.१६	५.३५	९.५०	२.३५	कन्या	भ. १३/४३ से ०२/१० तक, कु. १९/२० तक, भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस
१३	बु	११	०३	२७	चि	२१	००	७.१६	५.३५	९.५१	२.३५	तुला ०८/०६	
१४	गु	१२	०५	०९	स्वा	२३	०६	७.१७	५.३५	९.५२	२.३४	तुला	
१५	शु	१३	०	०	वि	०१	३२	७.१८	५.३५	९.५२	२.३४	वृ. १८/५३	सूर्य मूल एवं धनु में ०३/०१ से, मलमास प्रारम्भ
१६	श	१३	०७	१२	अ	०४	१४	७.१८	५.३६	९.५२	२.३४	वृश्चिक	भ. ०७/१२ से २०/२० तक
१७	र	१४	०९	३१	ज्ये	०	०	७.१९	५.३६	९.५३	२.३४	वृश्चिक	
१८	सो	३०	१२	०२	ज्ये	०७	०८	७.१९	५.३७	९.५४	२.३४	धन ०७/०८	कु. और ज्वा. १२/०२ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१९	मं	१	१४	४०	मू	१०	१०	७.२०	५.३७	९.५४	२.३४	धन	कु. और ज्वा. १०/१० तक, राज. १४/४० से
२०	बु	२	१७	२२	पू.षा.	१३	१६	७.२०	५.३७	९.५४	२.३४	म. २०/०२	राज. १३/१६ तक, व्या. ०५/४७ से
२१	गु	३	१९	५९	उ.षा.	१६	१९	७.२१	५.३८	९.५५	२.३४	मकर	र. १६/१९ से, व्या. ०६/३६ तक
२२	शु	४	२२	२३	श्र	१९	१२	७.२१	५.३८	९.५५	२.३४	मकर	भ. ०९/१३ से २२/२३ तक, र. १९/१२ तक
२३	श	५	२४	२६	ध	२१	४४	७.२२	५.३९	९.५६	२.३४	कुंभ ०८/३१	पं. ०८/३१ से, र. २१/४४ से
२४	र	६	०१	५५	श	२३	४६	७.२२	५.३९	९.५६	२.३४	कुंभ	पं., र. २३/४६ तक
२५	सो	७	०२	४४	पू.भा.	०१	०९	७.२३	५.४०	९.५७	२.३४	मीन १८/५३	पं., भ. ०२/४४ से, व्य. ०७/२६ से ०६/४५ तक
२६	मं	८	०२	४४	उ.भा.	०१	४७	७.२३	५.४०	९.५७	२.३४	मीन	पं., सि. ०१/४७ तक, भ. १४/५० तक, र. ०१/४७ से
२७	बु	९	०१	५५	रे	०१	३६	७.२४	५.४१	९.५८	२.३४	मेष ०१/३६	र. अहोरात्र, पं. ०१/३६ तक, कु. और मृ. ०१/३६ से
२८	गु	१०	२४	१७	अ	२४	३८	७.२४	५.४१	९.५८	२.३४	मेष	र. अहोरात्र, सूर्य पूर्वाषाढा में ०५/१२ से
२९	शु	११	२१	५४	भ	२२	५६	७.२५	५.४२	९.५९	२.३४	वृष ०४/२६	भ. ११/११ से २१/५४ तक, राज. २१/५४ से २२/५६ तक, र. २२/५६ तक
३०	श	१२	१८	५६	कृ	२०	३९	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	वृष	अ. २०/३९ से (प्रयाणे वर्ज्य)
३१	र	१३	१८	२९	रो	१७	५५	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	मि. ०४/२५	र. १७/५५ से
१	सो	१४	११	४५	मृ	१४	५४	७.२५	५.४४	१०.००	२.३५	मिथुन	अ. १४/५४ तक, भ. ११/४५ से २१/५१ तक, र. १४/५४ तक, **पक्खी**
२	मं	१५/१	०७/०४	५५/१०	आ	११	४९	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	कर्क ०३/३३	यम. ११/४९ तक, कु. ११/४९ से ०४/१० तक, वै. ०१/०४ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३	बु	२	२४	४०	पुन / पु	०८ / ०६	५० / ०९	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	कर्क	राज. ०८/५० से ०६/०९ तक, वै. २०/५४ तक
४	गु	३	२१	३४	आ	०३	५५	७.२७	५.४६	१०.०२	२.३५	सिंह ०३/५५	भ. ११/०३ से २१/३४ तक
५	शु	४	१९	०२	म	०२	१८	७.२७	५.४७	१०.०२	२.३५	सिंह	कु. १९/०२ से ०२/१८ तक, सि. ०२/१८ से
६	श	५	१७	११	पू.फा.	०१	२२	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	क. ०७/१४	र. ०१/२२ से
७	र	६	१६	०६	उ.फा.	०१	१२	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	कन्या	भ. १६/०६ से ०३/५१ तक, र. ०१/१२ तक, अ. ०१/१२ से
८	सो	७	१५	४८	ह	०१	४८	७.२७	५.४९	१०.०२	२.३५	कन्या	
९	मं	८	१६	१७	चि	०३	०६	७.२७	५.५०	१०.०३	२.३६	तुला १४/२२	
१०	बु	९	१७	२७	स्वा	०५	०२	७.२७	५.५१	१०.०३	२.३६	तुला	कु. ०५/०२ से, भ. ०६/१५ से
११	गु	१०	१९	१२	वि	०	०	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	वृ. २४/५०	सूर्य उत्तराषाढ़ा में ०७/१६ से, भ. १९/१२ तक
१२	शु	११	२१	२४	वि	०७	२८	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	वृश्चिक	कु. ०७/२८ तक, राज. २१/२४ से
१३	श	१२	२३	५४	अ	१०	१६	७.२७	५.५३	१०.०३	२.३६	वृश्चिक	
१४	र	१३	०२	३२	ज्ये	१३	१५	७.२७	५.५४	१०.०४	२.३७	धन १३/१५	सि. १३/१५ से, सूर्य मकर में १३/४७ से, भ. ०२/३२ से, मलमास समाप्त
१५	सो	१४	०५	१३	मू	१६	२०	७.२७	५.५५	१०.०४	२.३७	धन	भ. १५/५३ तक, व्या. ०८/०१ से
१६	मं	३०	०	०	पू.षा.	१९	२३	७.२७	५.५६	१०.०४	२.३७	म. ०२/०८	व्या. ०८/५५ तक, पक्खी
१७	बु	३०	०७	४८	उ.षा.	२२	१९	७.२७	५.५७	१०.०५	२.३८	मकर	कु. २२/१९ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१८	गु	१	१०	१३	श्र	०१	०३	७.२७	५.५८	१०.०५	२.३८	मकर	
१९	शु	२	१२	२३	ध	०३	२९	७.२७	५.५९	१०.०५	२.३८	कुंभ १४/१८	राज. ०३/२९ तक, पं. १४/१८ से, र. ०३/२९ से, व्य. ११/०३ से
२०	श	३	१४	१२	श	०५	३२	७.२६	५.५९	१०.०५	२.३८	कुंभ	पं., भ. ०२/५७ से, र. ०५/३२ तक, व्य. ११/१९ तक
२१	र	४	१५	३४	पू.भा.	०७	०७	७.२५	६.००	१०.०४	२.३९	मीन २४/४५	पं., भ. १५/३४ तक, र. ०७/०७ से
२२	सो	५	१६	२६	उ.भा.	०	०	७.२४	६.००	१०.०३	२.३९	मीन	पं., र. अहोरात्र, बसंत पंचमी
२३	मं	६	१६	४१	उ.भा.	०८	०८	७.२४	६.०१	१०.०३	२.३९	मीन	पं., सि. ०८/०८ तक, र. ०८/०८ तक
२४	बु	७	१६	१८	रे	०८	३४	७.२४	६.०२	१०.०३	२.३९	मेष ०८/३४	पं. ०८/३४ तक, मृ. ०८/३४ से, सूर्य श्रवण में ०९/३० से, भ. १६/१८ से ०३/५१ तक, १५४वां मर्यादा महोत्सव
२५	गु	८	१५	१४	अ	०८	२१	७.२४	६.०३	१०.०३	२.४०	मेष	
२६	शु	९	१३	३२	भ / कृ	०७ / ०६	३० / ०४	७.२३	६.०३	१०.०३	२.४१	वृष १३/११	र. ०७/३० से, कु. और यम. ०६/०४ से, गणतंत्र दिवस
२७	श	१०	११	१५	रो	०४	०५	७.२२	६.०४	१०.०३	२.४१	वृष	अ. ०४/०५ तक (प्रयाणे वर्ज्य), भ. २१/५५ से, र. ०४/०५ तक
२८	र	११ / १२	०८ / ०५	२८ / १९	मृ	०१	४३	७.२२	६.०५	१०.०३	२.४१	मि. १४/५६	भ. ०८/२८ तक, राज ०८/२८ से ०१/४३ तक, वै. १८/३३ से
२९	सो	१३	०१	५४	आ	२३	०४	७.२२	६.०६	१०.०३	२.४१	मिथुन	र. २३/०४ से, वै. १४/३७ तक
३०	मं	१४	२२	२४	पुन	२०	१९	७.२२	६.०७	१०.०३	२.४१	कर्क १५/०१	र. २०/१९ तक, भ. और राज. २२/२४ से
३१	बु	१५	१८	५८	पु	१७	३७	७.२२	६.०८	१०.०३	२.४१	कर्क	चन्द्रग्रहण, भ. ०८/४० तक, राज. १७/३७ तक, पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१	गु	१	१५	४५	आ	१५	०७	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	सिंह १५/०७	
२	शु	२	१२	५६	म	१३	०१	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	सिंह	राज. और सि. १३/०१ से, भ. २३/४३ से
३	श	३	१०	३९	पू.फा.	११	२६	७.२१	६.१०	१०.०३	२.४२	क. १७/०७	भ. १०/३९ तक
४	र	४	०९	०१	उ.फा.	१०	३१	७.२१	६.११	१०.०३	२.४२	कन्या	अ. १०/३१ से
५	सो	५	०८	०८	ह	१०	२०	७.२०	६.१२	१०.०३	२.४४	तुला २२/३२	कु. १०/२० तक, र. १०/२० से
६	मं	६	०८	०३	चि	१०	५६	७.१९	६.१३	१०.०३	२.४४	तुला	राज. ०८/०३ से १०/५६ तक, भ. ०८/०३ से २०/१९ तक, र. १०/५६ तक, सूर्य धनिष्ठा में १२/४६ से, र. १२/४६ से
७	बु	७	०८	४७	स्वा	१२	१८	७.१९	६.१४	१०.०३	२.४४	तुला	र. १२/१८ तक
८	गु	८	१०	१५	वि	१४	२१	७.१८	६.१५	१०.०२	२.४४	वृ. ०७/४७	
९	शु	९	१२	१८	अ	१६	५६	७.१७	६.१६	१०.०२	२.४५	वृश्चिक	भ. ०१/३० से, व्या. ११/०१ से
१०	श	१०	१४	४६	ज्ये	१९	५४	७.१६	६.१७	१०.०१	२.४५	धन १९/५४	भ. १४/४६ तक, व्या. ११/४६ तक
११	र	११	१७	२६	मू	२३	००	७.१५	६.१७	१०.००	२.४६	धन	सि. २३/०० तक, राज. २३/०० से
१२	सो	१२	२०	०६	पू.षा.	०२	०४	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	धन	मू. ०२/०४ से, सूर्य कुंभ में ०२/४९ से
१३	मं	१३	२२	३६	उ.षा.	०४	५८	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	म. ०८/४९	भ. २२/३६ से, व्य. १४/३४ से
१४	बु	१४	२४	४७	श्र	०	०	७.१३	६.१९	९.५९	२.४७	मकर	भ. ११/४४ तक, व्य. १५/१४ तक
१५	गु	३०	०२	३६	श्र	०७	३२	७.१२	६.२०	९.५९	२.४७	कुंभ २०/४०	पं. २०/४० से पक्ष्वी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१६	शु	१	०३	५८	ध	०९	४३	७.१२	६.२१	९.५९	२.४७	कुंभ	पं.
१७	श	२	०४	५२	श	११	२८	७.११	६.२१	९.५९	२.४८	मीन ०६/३०	पं.
१८	र	३	०५	१८	पू.भा.	१२	४७	७.१०	६.२२	९.५८	२.४८	मीन	पं., र. १२/४७ से, राज. १२/४७ से ०५/१८ तक
१९	सो	४	०५	१६	उ.भा.	१३	३८	७.१०	६.२३	९.५८	२.४८	मीन	पं., र. १३/३८ तक, सूर्य शतभिषा में १७/१४ से, र. १७/१४ से, भ. १७/२१ से ०५/१६ तक,
२०	मं	५	०४	४७	रे	१४	०३	७.०९	६.२३	९.५७	२.४८	मेष १४/०३	पं. और र. १४/०३ तक, कु. १४/०३ से, अ. १४/०३ से (प्रवेशे वर्ज्य)
२१	बु	६	०३	५१	अ	१४	०२	७.०८	६.२४	९.५७	२.४९	मेष	मृ. १४/०२ तक, कु. १४/०२ तक, र. १४/०२ से, राज. ०३/५१ से
२२	गु	७	०२	३०	भ	१३	३५	७.०७	६.२४	९.५६	२.४९	वृष १९/१४	र. १३/३५ तक, यम. १३/३५ से, भ. ०२/३० से, ज्वा. ०२/३० से, वै. ०६/३४ से
२३	शु	८	२४	४४	कृ	१२	४३	७.०६	६.२५	९.५६	२.५०	वृष	ज्वा. १२/४३ तक, यम. १२/४३ से, भ. १३/४० तक, वै. ०३/५३ तक
२४	श	९	२२	३७	रो	११	२९	७.०५	६.२५	९.५५	२.५०	मि. २२/४४	अ. ११/२९ तक (प्रयाणे वर्ज्य), ज्वा. ११/२९ तक, र. ११/२९ से
२५	र	१०	२०	११	मृ	०९	५४	७.०४	६.२६	९.५४	२.५१	मिथुन	र. अहोरात्र, भ. ०६/५२ से
२६	सो	११	१७	३०	आ / पुन	०८ / ०६	०३ / ०१	७.०३	६.२७	९.५४	२.५२	कर्क २४/३२	र. ०८/३० तक, कु. ०८/३० से १७/३० तक, भ. १७/३० तक
२७	मं	१२	१४	४०	पु	०३	५२	७.०२	६.२७	९.५३	२.५२	कर्क	राज. १४/४० तक, र. ०३/५२ से
२८	बु	१३	११	४८	आ	०१	४६	७.०१	६.२८	९.५३	२.५२	सिंह ०१/४६	र. ०१/४६ तक
१	गु	१४ / १५	०८ / ०६	५९ / २३	म	२३	४९	६.५९	६.२९	९.५२	२.५३	सिंह	होलिका चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२	शु	१	०४	०७	पू.फा.	२२	१०	६.५८	६.३०	९.५१	२.५३	क. ०३/४८	सि. २२/१० तक, धुलेटी
३	श	२	०२	२१	उ.फा.	२०	५७	६.५७	६.३०	९.५०	२.५३	कन्या	मृ. और यम. २०/५७ से
४	र	३	०१	१०	ह	२०	१८	६.५६	६.३०	९.५०	२.५३	कन्या	अ. २०/१८ तक, भ. १३/४१ से ०१/१० तक, राज. २०/१८ से ०१/१० तक, सुर्य पुर्वाभाद्रपद में २३/३६ से
५	सो	४	२४	४२	चि	२०	२०	६.५५	६.३१	९.४९	२.५४	तुला ०८/१४	
६	मं	५	०१	००	स्वा	२१	०६	६.५४	६.३१	९.४८	२.५४	तुला	कु. २१/०६ से, व्या. १७/४७ से
७	बु	६	०२	०३	वि	२२	३७	६.५३	६.३२	९.४८	२.५५	वृ. १६/०९	कु. २२/३७ तक, र. २२/३७ से, अ. २२/३७ से, भ. ०२/०३ से, राज. ०२/०३ से, व्या. १७/१८ तक
८	गु	७	०३	४७	अ	२४	४७	६.५२	६.३३	९.४७	२.५५	वृश्चिक	भ. १४/५० तक, र. २४/४७ तक
९	शु	८	०६	०२	ज्ये	०३	२९	६.५१	६.३४	९.४७	२.५६	धन ०३/२९	भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस, वर्षीतप प्रारम्भ
१०	श	९	०	०	मू	०६	२९	६.५०	६.३४	९.४६	२.५६	धन	व्य. १८/४४ से
११	र	९	०८	३७	पू.षा.	०	०	६.४९	६.३४	९.४५	२.५६	धन	भ. २१/५६ से, व्य. १९/४२ तक
१२	सो	१०	११	१५	पू.षा.	०९	३५	६.४८	६.३५	९.४५	२.५७	म. १६/२१	मृ. ०९/३५ से, भ. ११/१५ तक
१३	मं	११	१३	४२	उ.षा	१२	३१	६.४७	६.३५	९.४४	२.५७	मकर	कु. १२/३१ से १३/४२ तक
१४	बु	१२	१५	४७	श्र	१५	०७	६.४६	६.३६	९.४४	२.५७	कुंभ ०४/१४	राज. १५/०७ से १५/४७ तक, सूर्य मीन में २३/४० से, पं. ०४/१४ से, मलमास प्रारम्भ
१५	गु	१३	१७	२१	ध	१७	१३	६.४५	६.३७	९.४३	२.५७	कुंभ	पं., भ. १७/२१ से ०५/५५ तक,
१६	शु	१४	१८	१९	श	१८	४५	६.४४	६.३८	९.४२	२.५८	कुंभ	पं. पक्खी
१७	श	३०	१८	४२	पू.भा.	१९	४४	६.४३	६.३९	९.४२	२.५९	मीन १३/३२	पं.

		कोलकाता		दिल्ली		मुम्बई		चेन्नई		बैंगलोर		जोधपुर	
महीना		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योव्य	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	१	६.१७	५.०३	७.१४	५.३५	७.१२	६.१२	६.२९	५.५४	६.४२	६.०४	७.२८	५.५२
	१५	६.१९	५.१२	७.१५	५.४६	७.१५	६.२१	६.३४	६.०३	६.४६	६.१२	७.३१	६.०१
फरवरी	१	६.१६	५.२४	७.१०	६.००	७.१३	६.३१	६.३८	६.२१	६.४७	६.२१	७.२६	६.१५
	१५	६.०९	५.३२	७.००	६.११	७.०८	६.३८	६.३०	६.१६	६.४३	६.२५	७.२७	६.२५
मार्च	१	५.५८	५.४०	६.४७	६.२०	६.५८	६.४४	६.२४	६.१८	६.३६	६.२८	७.०५	६.३३
	१५	५.४६	५.४६	६.३२	६.२९	६.४८	६.४८	६.१६	६.२०	६.२७	६.३१	६.५१	६.४१
अप्रैल	१	५.३०	५.५२	६.१२	६.३९	६.३३	६.५२	६.०५	६.२१	६.१७	६.३१	६.३४	६.५०
	१५	५.१७	५.५७	५.५६	६.४७	६.२२	६.५६	५.५७	६.२२	६.०८	६.३२	६.१९	६.५६
मई	१	५.०४	६.०३	५.४१	६.५६	६.११	७.०२	५.४९	६.२४	५.५९	६.३५	६.०४	७.०५
	१५	४.५७	६.०९	५.३१	७.०४	६.०५	७.०६	५.४५	६.२८	५.५४	६.३८	५.५५	७.१२
जून	१	४.५२	६.१७	५.२४	७.१४	६.०१	७.१२	५.४३	६.३२	५.५२	६.४२	५.४९	७.२०
	१५	४.५२	६.२२	५.२३	७.२०	६.०१	७.१७	५.४५	६.३७	५.५३	६.४७	५.४८	७.२६
जुलाई	१	४.५५	६.२५	५.२७	७.२३	६.०५	७.२०	५.४८	६.३९	५.५८	६.५०	५.५१	७.२९
	१५	५.०१	६.२४	५.३३	७.२१	६.१०	७.१९	५.५२	६.३९	६.०१	६.५०	५.५८	७.२७
अगस्त	१	५.०८	६.१७	५.४२	७.१२	६.१६	७.१४	५.५५	६.३६	६.०५	६.४७	६.०५	७.२१
	१५	५.१३	६.०८	५.५०	७.०१	६.२०	७.०६	५.५८	६.२९	६.०८	६.४०	६.१३	७.११
सितम्बर	१	५.१९	५.५४	५.५९	६.४३	६.२४	६.५३	५.५९	६.१९	६.०९	६.३१	६.१९	६.५५
	१५	५.२३	५.४०	६.०६	६.२६	६.२६	६.४१	५.५८	६.०९	६.०९	६.२१	६.२४	६.४०
अक्टूबर	१	५.२८	५.२४	६.१४	६.०७	६.२९	६.२७	५.५८	५.५८	६.१०	६.१०	६.३३	६.२२
	१५	५.३३	५.१२	६.२२	५.५२	६.३३	६.१६	५.५९	५.४९	६.११	६.०१	६.४०	६.०७
नवम्बर	१	५.४२	४.५९	६.३३	५.३६	६.३९	६.०५	६.०२	५.४२	६.१४	५.५४	६.४९	५.५३
	१५	५.४९	४.४३	६.४४	५.२७	६.४६	६.००	६.०७	५.३९	६.२०	५.५०	७.००	५.४४
दिसंबर	१	६.००	४.५१	६.५६	५.२४	६.५६	६.००	६.१३	५.४१	६.२६	५.५१	७.११	५.४२
	१५	६.०९	४.५४	७.०६	५.२६	७.०४	६.०४	६.२२	५.४६	६.३४	५.५६	७.२१	५.४३

नक्षत्र से राशि और नामाक्षर का ज्ञान

जिस दिन बालक का जन्म हो, उस समय का नक्षत्र पंचांग में देखें, फिर नक्षत्र के अनुसार नाम का अक्षर और राशि नीचे लिखी तालिका से जानें–

अक्षर	नक्षत्र	राशि	अक्षर	नक्षत्र	राशि
चू चे चो ला	अश्विनी	मेष	पे पो, रा री	चित्रा	कन्या-२, तुला-२
ली लू ले लो	भरणी	मेष	रू रे रो ता	स्वाति	तुला
आ, ई उ ए	कृतिका	मेष-१, वृष-३	ती तू ते, तो	विशाखा	तुला-३, वृश्चिक-१
ओ वा वी वू	रोहिणी	वृष	ना नी नू ने	अनुराधा	वृश्चिक
वे वो, क की	मृगशिरा	वृष-२, मिथुन-२	नो या यी यु	ज्येष्ठा	वृश्चिक
कु घ ड़ छ	आर्द्रा	मिथुन	ये यो भा भी	मूल	धन
के को ह, ही	पुनर्वसु	मिथुन-३, कर्क-१	भू धा फा ढ़ा	पूर्वाषाढ़ा	धन
हु हे हो डा	पुष्य	कर्क	भे, भो जा जी	उत्तराषाढ़ा	धन-१, मकर-३
डी डू ड डो	आश्लेषा	कर्क	खा खू खे खो	श्रवण	मकर
मा मी मू मे	मघा	सिंह	गा गी, गू गे	धनिष्ठा	मकर-२, कुम्भ-२
मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी	सिंह	गो सा सि सू	शतभिषा	कुम्भ
टे, टो प पी	उत्तराफाल्गुनी	सिंह-१, कन्या-३	से सो द, दि	पूर्वाभाद्रपद	कुम्भ-३, मीन-१
पू ष णा ठ	हस्त	कन्या	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपद	मीन
			दे दो च ची	रेवती	मीन

राशि स्वामी—मेष और वृश्चिक का मंगल, वृषभ और तुला का शुक्र, मिथुन और कन्या का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का सूर्य, धन और मीन का गुरु, मकर और कुंभ का स्वामी शनि होता है।

गुरु-दर्शन के लिए नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, श्रवण, अनुराधा तथा शुभ वार।

घात-चक्रम्

घात तिथि घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जये प्राज्ञैरन्य कर्मसुशोभनम्।।

राशि–	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास–	कार्तिक	मिगसर	आषाढ़	पोष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि–	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार–	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र–	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात प्रहर–	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु. घात चंद्र	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धन	वृषभ	मीन	सिंह	धन	कुंभ
स्त्री घात चंद्र	मेष	धन	धन	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धन	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुंभ

आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा घोषित आगामी चातुर्मास एवं मर्यादा महोत्सव

चातुर्मास (वर्ष)	स्थान	मर्यादा महोत्सव (वर्ष)	स्थान
सन् 2017	कोलकाता (बंगाल)	सन् 2017	सिलीगुड़ी (बंगाल)
सन् 2018	चेन्नई (तमिलनाडु)	सन् 2018	कटक (उड़ीसा)
सन् 2019	बेंगलुरू (कर्नाटक)		
सन् 2020	हैदराबाद (तेलंगाना)		

यात्रा में चंद्र विचार

मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे, वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
युग्मे तुले कुंभसु पश्चिमायां, कार्कालि मीने दिशिचोत्तरस्याम्।।

अर्थ— मेष, सिंह, धन पूर्व। वृष कन्या, मकर दक्षिण।
मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन, उत्तर।

फलम्— सन्मुखे अर्थलाभाय, दक्षिणे सुखसंपदा।
पृष्ठे तु प्राणनाशाय, वामे चंद्रे धनक्षयः।।

अर्थ— सन्मुख का चन्द्रमा, धनदाता दाहिना सुखदाता।
पीठ का प्राण-हर्ता और बायां धन-हर्ता।

यात्रा में योगिनी विचार

ईशान ३०/८	पूर्व १/९	अग्नि ३/११
उत्तर २/१०	योगिनी सुखदा वामे। पृष्ठे वांछित दायिनी।। दक्षिणे धनहंत्री च। सन्मुखे मरणप्रदा।।	दक्षिण ५/१३
७/१५ वायव्य	६/१४ पश्चिम	४/१२ नैऋत्य

दिशाशूल-विचार-चक्रम्

	पूर्व चन्द्र, शनि	
उत्तर मंगल, बुध	दिशाशूल ले जावो वामे। राहू योगिनी पूठ।। सन्मुख लेवै चन्द्रमा। लावे लक्ष्मी लूट।।	दक्षिण गुरु
	रवि, शुक्र पश्चिम	

काल-राहू-विचार-चक्रम्

ईशान	पूर्व शनि	अग्नि शुक्र
उत्तर रवि	अर्कोत्तरो वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋते च याम्ये गुरौ वह्निदिशा च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंति काल।	दक्षिण गुरु
सोम वायव्य	मंगल पश्चिम	बुध नैऋत्य

अभिजित मुहूर्त—दिनमान का आधा करने से जो समय प्राप्त हो उस समय से २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद तक अभिजित मुहूर्त रहता है, जो नगर प्रवेश आदि में श्रेष्ठ माना जाता है। इस मुहूर्त का बुधवार के दिन निषेध है।

सुयोग-कुयोग चक्र

योग	तिथि या नक्षत्र	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि	तिथि			३,८,१३ (जया)	२,७,१२ (भद्रा)	५,१०,१५ (पूर्णा)	१,६,११ (नंदा)	४,९,१४ (रिक्ता)
	–नक्षत्र	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाति
अमृतसिद्धि	–नक्षत्र	हस्त	मृगशिरा	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थसिद्धि	–नक्षत्र	मू. ह. पुष्य अश्वि. रे. उत्तरा-३	अनु. श्र.रो. कृ. पुष्य	उ.भा.अश्वि. कृ. आश्ले.	ह. कृ.रो. मृ. अनु.	पुन.पुष्य.रे. अनु. अश्वि.	अश्वि.रे. श्र. पुन. अनु.	रो. स्वा. श्र.
आनन्द	–नक्षत्र	अश्वि.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ. षा.	श.
मृत्यु	तिथि–	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	२,७,१२	५,१०,१५
	–नक्षत्र	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.
कालयोग	–नक्षत्र	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पू. भा.

विशेष सुयोग (१) २,३,७,१२,१५ तिथि, रविवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार तथा भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पू. षा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, उ.भा. नक्षत्र–इनमें तीनों का सुयोग मिलने पर राजयोग बनता है, जो विशेष सिद्धि-दायक है।

(२) १,५,६,१०,११ तिथि, सोम, मंगल, बुध, शुक्रवार तथा अश्वि., रो., पुन., मघा, ह., वि., मू., श्र., पू. भा. नक्षत्र–इनमें तीनों का संयोग मिलने पर कुमार योग बनता है, जो शुभ है।

विशेष कुयोग–यदि एकम तिथि को मूल नक्षत्र हो, पंचमी को भरणी हो, अष्टमी को कृतिका हो, नवमी को रोहिणी हो, दशमी को आश्लेषा हो तो ज्वालामुखी योग बनता है, जो सब कार्यों में वर्जित है।

ज्ञातव्य– (क) सुयोग और कुयोग दोनों होने पर कुयोग का फल नहीं रहता।

(ख) अभिजित नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण तथा श्रवण का प्रथम पन्द्रहवां भाग अभिजित नक्षत्र होता है।

पौरसी प्रमाण

दिनांक	पग	आंगुल	घंटा	मिनट
२१ अप्रैल	२	८	३	१२
२२ मई	२	४	३	२२
२२ जून	२	०	३	२७
२४ जुलाई	२	४	३	२२
२४ अगस्त	२	८	३	१२
२३ सितम्बर	३	०	३	०
२३ अक्टूबर	३	४	२	४८
२१ नवम्बर	३	८	२	३८
२२ दिसम्बर	४	०	२	३४
२० जनवरी	३	८	२	३८
२१ फरवरी	३	४	२	४८
२० मार्च	३	०	३	०

राहू-काल

वार	समय	राहू-काल बेला
रवि	सायं	४-३० से ६-००
सोम	प्रातः	७-३० से ९-००
मंगल	मध्याह्न	३-०० से ४-३०
बुध	मध्याह्न	१२-०० से १-३०
गुरु	मध्याह्न	१-३० से ३-००
शुक्र	प्रातः	१०-३० से १२-००
शनि	प्रातः	९-०० से १०-३०

टिप्पण :—राहू-काल (समय) में यात्रा करना वर्जित है।

दिन के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

With Best Compliments from

किसका है ? यह मत देखो।
क्या है ? इस पर ध्यान दो।
अच्छा विचार व अच्छी कृति, फिर वह किसी की
भी क्यों न हो, स्वीकार कर लो।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

पुखराज बड़ोला

मुख्य न्यासी, जैन विश्व भारती

जितेन्द्र मुकेश श्रेयांस बड़ोला

ब्यावर - चेन्नई

With Best Compliments from

तात्कालिक लाभ को
अधिक महत्व मत दो ।
धैर्य रखो व दीर्घकालिक लाभ पर
चिन्तन को केन्द्रित करो ।

– आचार्य महाश्रमण

:: हार्दिक शुभकामनाओं सहित ::

शिल्पिन ख्यालीलाल तातेड़

धानीन – मुंबई (घाटकोपर)

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

तुम विभिन्न मनुष्यों से मिलते हो, साथ रहते हो।
तुम उनकी विशेषताओं को परख कर
उन्हें आत्मसात करने का प्रयास करो।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

अमरचंद धरमचंद लुंकड़

राणावास - चेन्नई

With Best Compliments from

धर्म ही एकमात्र ऐसा मित्र है,
जो इहलोक और परलोक में साथ देता है,
दुर्गति से बचाता है और
चिरस्थायी सुख-शांति प्रदान करता है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

श्रीमती सायर-हीरालाल मालू

सुजानगढ़-बैंगलोर

अध्यात्म ऊर्जा का केन्द्र : जैन विश्व भारती

विश्व इतिहास में मानव संस्कृति को सार्थक दिशा देने वाले महापुरुषों में क्रांतिकारी द्रष्टा, विश्वसंत गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के स्वप्नों की साकार प्रतिमान जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध साधना एवं सेवा के विशेष उद्देश्यों के साथ सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई। जैन विश्व भारती अहिंसा और शांति का अनुपम सांस्कृतिक केन्द्र है। शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय इन सात महान प्रवृत्तियों को अपने आप में समेटे हुए यह संस्था तपोवन का रूप ले चुकी है और यहां के प्रकंपन यह इंगित दे रहे हैं कि यह प्राचीन काल से कोई तपोभूमि रही है। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण व निर्देशन में संस्था निरन्तर गतिशील है।

शिक्षा

जैन विश्व भारती की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई थी उनमें से एक मुख्य प्रवृत्ति है–शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति यहां प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में वर्तमान में विमल विद्या विहार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल तथा महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं टमकोर संचालित हैं। मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से अब तक लगभग 45,000 विद्यार्थियों ने शिक्षा प्राप्त की है जिनमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने उच्च पदों पर पहुंच कर संस्था का गौरव बढ़ाया है।

भावी पीढ़ी में संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से **'समण संस्कृति संकाय'** के अंतर्गत जैन विद्या की शिक्षा प्रदान की जाती है।

मनुष्य के बौद्धिक विकास के साथ मानसिक, भावनात्मक और चारित्रिक विकास हेतु आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने **'जीवन विज्ञान'** की परिकल्पना प्रस्तुत की। ध्यान, योग एवं शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा का यह क्रांतिकारी प्रयोग जैन विश्व भारती के अंतर्गत **'केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी'** द्वारा साकार हो रहा है।

सेवा

शिक्षा के साथ-साथ सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी है। जैन विश्व भारती परिसर में **'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला'** तथा बीदासर में **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र'** सुचारु रूप से संचालित हैं।

'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' द्वारा चिकित्सा सेवा विषयक जन-कल्याणकारी प्रवृत्ति का संचालन किया जाता है। यहां जिन औषधियों का निर्माण होता है वे आयुर्वेद विभाग से प्राप्त ड्रग मैन्युफैक्चरिंग लाइसेन्स के अंतर्गत जी.एम.पी. प्रमाणित हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर एवं फिजियोथेरेपी पद्धति से रोगियों की चिकित्सा हेतु **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी मानव कल्याण केन्द्र'** की स्थापना जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में बीदासर में की गई। यहां आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यायाम की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान में केन्द्र के अंतर्गत होमियोपैथिक चिकित्सा से रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है।

साधना

प्रेक्षाध्यान–आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा निर्देशित प्रेक्षाध्यान पद्धति के निरंतर प्रयोग, प्रशिक्षण एवं शोध का केन्द्र है जैन विश्व भारती स्थित–**'तुलसी अध्यात्म नीडम्'**, जहां योग एवं अध्यात्म साधना के अभ्यास एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के भाव परिष्कार व संवेग परिवर्तन के प्रयोग होते हैं। सन् 1978 में स्थापित तुलसी अध्यात्म नीडम् का उद्देश्य है–प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण, विकास एवं अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना।

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका **'प्रेक्षाध्यान'** का विगत 31 वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

साहित्य

साहित्य प्रकाशन एवं वितरण–साहित्य प्रकाशन एवं वितरण जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि से संबंधित साहित्य के साथ आचार्य भिक्षु, श्रीमद् जयाचार्य, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण एवं साधु-साध्वियों, समण-समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/सम्पादित साहित्य का प्रकाशन विगत लगभग 39 वर्षों से किया जा रहा है। जैन विश्व भारती गत 2-3 वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अन्य प्रकाशकों के साथ मिलकर भी साहित्य प्रकाशन व वितरण का कार्य कर रही है।

शोध

जैन विश्व भारती की स्थापना के उद्देश्यों में **शोध** का विशेष स्थान है। पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने इसकी स्थापना के उद्देश्यों में जैन धर्म एवं दर्शन के उच्च-स्तरीय शोध संस्थान की परिकल्पना सामने रखी थी। उसी परिकल्पना की सुखद परिणति स्वरूप जैन विश्व भारती की शोध प्रवृत्ति के अंतर्गत आगम सम्पादन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। यह कार्य पूर्व में आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशन में चल रहा है। आगम सम्पादन के प्रबन्धन का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग–जैन विश्व भारती में अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ जैन हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनकी सुरक्षा एवं संरक्षण जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है।

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान–जैन विश्व भारती द्वारा कुल 10 पुरस्कारों का संचालन विभिन्न प्रायोजकों के सहयोग से किया जा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार, आचार्य तुलसी अनेकान्त सम्मान, आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार, संघ सेवा पुरस्कार, जय तुलसी विद्या पुरस्कार, आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान, महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषी पुरस्कार, जीवन विज्ञान पुरस्कार, गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार आदि पुरस्कारों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं देने एवं उल्लेखनीय कार्य करने वालों को प्रोत्साहित किया जाता है और उनकी प्रतिभा का सम्यक् मूल्यांकन किया जाता है।

संस्कृति

तुलसी कलादीर्घा–जैन विश्व भारती में स्थित तुलसी कलादीर्घा (आर्ट गैलरी) में जैन धर्म को दर्शाने वाली प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों एवं हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री का संग्रह किया गया है। दुर्लभ, कलापूर्ण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व की प्रदर्शन योग्य सामग्री के साथ तेरापंथ के आचार्यों को सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से संबंधित प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं अन्य सामग्री को यहां पर शो विंडो में कलापूर्ण ढंग से सुसज्जित किया गया है।

उक्त सभी गतिविधियों के साथ सुरम्य हरीतिका से सुशोभित परिसर जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कह रहा है। जैन विश्व भारती परिवार आप सभी को सादर आमंत्रित करता है। आप यहां पधारें एवं यहां संचालित गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। संस्था के विकास हेतु आपके अमूल्य सुझावों एवं विचारों का स्वागत है। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें–

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : (01581) 226025/80, फैक्स : 227280

ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

वेबसाईट : www. jvbharati.org

प्रेक्षाध्यान

आचार्य तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के लोक कल्याणकारी अवदानों की श्रृंखला में एक प्रमुख अवदान है–'प्रेक्षाध्यान'। जो आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन दिशा-निर्देशन में जैन विश्व भारती की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में संचालित है। प्रेक्षाध्यान संबंधी समग्र गतिविधियों का नियमन जैन विश्व भारती के अन्तर्गत प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा होता है। प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा नियमित रूप से संचालित प्रेक्षाध्यान संबंधी प्रमुख गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत है।

1. प्रतिमाह प्रेक्षाध्यान शिविर

प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज.) के सुरम्य व शांत परिसर में अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर प्रतिमाह आयोजित होते हैं, शिविर में भाग लेने वालों के लिए आवास, भोजन, प्रशिक्षण आदि की समुचित व्यवस्थाएं यहां उपलब्ध हैं। इन मासिक प्रेक्षाध्यान शिविरों की श्रृंखला में तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनूं में आगामी वर्ष में आयोजित होने वाले शिविरों की जानकारी निम्नलिखित है–

1. 11-18 फरवरी 2017	6. 01-08 सितम्बर 2017
2. 11-18 मार्च 2017	7. 01-08 अक्टूबर 2017
3. 11-18 अप्रैल 2017	8. 01-08 नवम्बर 2017
4. 01-08 जुलाई 2017	9. 01-08 दिसम्बर 2017
5. 01-08 अगस्त 2017	

2. प्रेक्षाध्यान कार्यशालाएं

प्रेक्षाध्यान के अभ्यास एवं प्रयोग से अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें, इस दृष्टि से प्रेक्षा फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय संस्थाओं (बिना जाति, लिंग, समुदाय के भेदभाव के) द्वारा प्रेक्षाध्यान कार्यशालाएं आयोजित की जा सकती है। अपेक्षानुसार प्रशिक्षक की व्यवस्था प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा की जा सकती है।

3. स्थानीय स्तर पर प्रेक्षावाहिनी

प्रेक्षाध्यान में रुचि रखने वाले न्यूनतम दस साधकों के समूह का नाम है–'प्रेक्षावाहिनी'। इन साधकों को प्रेक्षाध्यान के अभ्यास, प्रयोग एवं प्रशिक्षण के लिए स्थानीय स्तर पर एक सुव्यवस्थित व्यवस्था उपलब्ध हो सके एवं परस्पर संपर्क एवं संवाद बना रहे, इस दृष्टि से प्रेक्षा फाउण्डेशन के अंतर्गत देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रेक्षावाहिनीयां गठित की जा रही है।

4. प्रेक्षा कार्ड योजना

प्रेक्षाध्यान को अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज तक पहुंचाने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए युगानुकूल सुविधाओं से सुसज्जित आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र का निर्माण किया गया है जिसकी गतिविधियों को व्यापक रूप प्रदान किए जाने की दृष्टि से प्रेक्षा फाउण्डेशन के अंतर्गतप्रेक्षा कार्ड योजना का शुभारम्भ किया गया है। इस कार्ड योजना के माध्यम से कार्ड धारक को प्रेक्षाध्यान संबंधी विशेष सुविधाएं यथा–प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले शिविर में किसी एक साप्ताहिक शिविर में

निःशुल्क सहभागिता, प्रेक्षाध्यान पत्रिका की निःशुल्क सदस्यता इत्यादि प्रदान की जाती है। प्रेक्षा कार्ड योजना के अंतर्गत निम्न श्रेणियां है–१.प्रेक्षा सिल्वर कार्ड २. प्रेक्षा गोल्डन कार्ड ३. प्रेक्षा प्लेटिनम कार्ड ४. प्रेक्षा एमरेल्ड कार्ड।

5. प्रेक्षाध्यान मासिक पत्रिका

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका 'प्रेक्षाध्यान' का विगत ३४ वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के सदस्य बनकर प्रेक्षाध्यान से संबंधित गतिविधियों की संपूर्ण जानकारी व्यक्ति घर बैठे प्राप्त कर सकता है।

6. प्रेक्षा प्रशिक्षक

प्रेक्षा प्रशिक्षकों के निर्माण हेतु प्रेक्षा फाउण्डेशन की एक महत्त्वपूर्ण योजना जारी है। इसके अंतर्गत प्रेक्षाध्यान का एक समग्र पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षाओं का क्रम रखा गया है। प्रेक्षा फाउण्डेशन प्रशिक्षकों निर्माण, उनसे नियमित संपर्क एवं प्रशिक्षण विधि की एकरूपता के लिए कटिबद्ध है।

प्रेक्षा फाउण्डेशन संबद्धता प्राप्त केन्द्र सूची

1. तुलसी अध्यात्म नीडम्, लाडनूं	8233344482
2. अध्यात्म साधना केन्द्र, मैहरोली	9643300655
3. प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा	9825033201
4. प्रेक्षाध्यान केन्द्र, कूचबिहार	9434213099
5. प्रेक्षाध्यान केन्द्र, राजकोट	9824043363
6. प्रेक्षा प्रकोष्ठ, चेन्नई	9440205427
7. महाप्रज्ञ प्रेक्षाध्यान केन्द्र, नागपुर	9373471831
8. प्रेक्षाध्यान केन्द्र, अम्बाबाड़ी	9426087220
9. प्रेक्षाध्यान केन्द्र, इन्दौर	9993465883
10. प्रेक्षाध्यान केन्द्र, सूरत	9377555545
11. प्रेक्षाध्यान केन्द्र, विक्रोली	9869990868
12. प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र, कांदीवली	9004937723
13. प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र (महिला), कांदीवली	9004798179
14. प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र, दामोदरवाड़ी, कांदीवली	9004937723
15. प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र, अशोकनगर कांदीवली	9004937723
16. अर्हम् प्रेक्षाध्यान योग केन्द्र, गौहाटी	9435042723
17. प्रेक्षाध्यान केन्द्र, रायपुर	9425285121
18. प्रेक्षाध्यान केन्द्र, चेन्नई	9840845337
19. प्रेक्षाध्यान केन्द्र, बैंगलोर	9686366250

प्रेक्षा फाउण्डेशन
तुलसी अध्यात्म नीडम्
जैन विश्व भारती परिसर
पोस्ट : लाडनूं-341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन नं. : 01581-226119, मोबाईल नं. : 08233344482
ई-मेलः foundation@preksha.com, वेबसाईटः www.preksha.com

ज्ञानशाला रजत जयंती समारोह

(2 अक्टूबर 2016–2 अक्टूबर 2017)

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी दूरदर्शी व स्वप्नदर्शी धर्मगुरु थे। ज्ञानशाला उनका एक सपना था। उनका यह सपना आज कितना शतशाखी होकर फलदायी बना है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ से अनंत ऊर्जा प्राप्त होती रही है। पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण की प्रारंभ से सतत प्रेरणा व असीम कृपादृष्टि ज्ञानशाला को प्राप्त हो रही है। आपश्री के नीति-निर्देशों के अनुरूप ज्ञानशाला हर दृष्टि से गतिशील है।

वर्तमान में ज्ञानशाला के केन्द्रीय संचालन का दायित्व जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा-ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के माध्यम से अत्यन्त कुशलता से संभाल रही है। सभी संघीय संस्थाओं का सहयोग प्राप्त है। चारित्रात्माओं की सतत प्रेरणा, समणीवृंद का श्रम सदैव इसका आधार रहता है। प्रशिक्षकों व कार्यकर्ताओं का पूरा योग है। आज ज्ञानशाला मिशन एक शक्तिशाली नेटवर्क बना हुआ है।

ज्ञानशाला प्रारूप के आधार पर ज्ञानशाला प्रारंभ हुए पच्चीस वर्ष संपन्न हो रहे हैं। इस संदर्भ में **'ज्ञानशाला रजत जयंती वर्ष'** हम सबके लिए स्वर्णिम अवसर है। इसके लिए सभी को कटिबद्ध बनना है। इस वर्ष के लिए निर्णीत कार्यक्रमों की क्रियान्विति के लिए हम सबको तत्पर व सक्रिय रहना है।

निर्धारित परियोजना

● ज्ञानशाला प्राध्यापकों ( ) का निर्माण ● ज्ञानशाला में प्रतिक्रमण व पच्चीस बोल कंठस्थ कराने का लक्ष्य ● ज्ञानशाला सोविनियर का प्रकाशन ● 'शिशु संस्कार बोध' का नवीन आकर्षक कलेवर व सामग्री के साथ प्रकाशन ● उत्तीर्ण ज्ञानशाला प्रशिक्षकों के लिए रिफ्रेसर कोर्स का निर्माण ● ज्ञानशाला से संबंधित गीतों की सी.डी. का निर्माण ● ज्ञानशाला प्रशिक्षकों की राष्ट्रीय स्तर पर कार्यशाला का आयोजन ● ज्ञानशाला वेबसाइट का प्रारंभ ● ज्ञानशाला के लिए उपयोगी साहित्य का प्रकाशन ● प्रचारात्मक साहित्य का व्यापक प्रसार ● प्रत्येक तेरापंथ भवन में 'ज्ञानशाला पुस्तकालय' का प्रारंभ ● ज्ञानशाला की महत्ता को रेखांकित करने वाली डाक्युमेंट्री तैयार करना ● संघीय पत्र-

पत्रिकाओं में 'ज्ञानशाला विशेषांक' के रूप में प्रकाश में लाने का प्रयास • पंच दिवसीय ज्ञानार्थी शिविरों का आयोजन • ज्ञानशाला के समग्र डाटा का संकलन • ज्ञानशालाओं व ज्ञानार्थियों के संख्यात्मक व गुणात्मक अभिवृद्धि का प्रयास • श्रद्धा के छोटे-छोटे क्षेत्रों को भी ज्ञानशाला नेटवर्क में लाने का निर्णय • स्थानीय सभी ज्ञानशालाओं में पृथक्-पृथक् रजत जयंती समारोह का ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा निर्धारित प्रारूप के अनुसार समायोजन।

ज्ञानशालाएं	**:**	**441**	**सेवारत प्रशिक्षक**	**:**	**3089**
ज्ञानार्थी	**:**	**16626**	**प्रशिक्षक**	**:**	**7419 (Cumulative)**

(ज्ञानशाला वर्ष 2014-2015 के आकड़ों के अनुसार)

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

प्रधान कार्यालय
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कोलकाता-700001
फोन : 033-22343598
ई-मेल : info@jstmahasabha.org
Web : www.jstmahasabha.org
(ज्ञानशाला सामग्री हेतु संपर्क)

हे प्रभो! यह तेरापंथ

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ कार्यालय
158/1 न्यु क्लाथ मार्केट, प्रथम तल
अहमदाबाद-380002
फोन : 079-66301463
ई-मेल : gyanshala@ymail.com
www.gyanshala.in
(परीक्षा एवं समग्र जानकारी हेतु संपर्क)

घर-घर जागे सद्संस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार

जीवन विज्ञान

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा प्रणीत **'जीवन विज्ञान'** सही ढंग से जीने का विज्ञान सिखाता है। स्वस्थ समाज रचना के लिए स्वस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण की अपेक्षा है। व्यक्तित्व की समग्रता केवल बौद्धिक विकास में नहीं है, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सर्वाधिक बल इसी पर दिया जा रहा है, समग्र विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास भी आवश्यक है। जीवन विज्ञान बौद्धिक ज्ञान की उपेक्षा नहीं करता परन्तु इसके साथ व्यक्तित्व विकास के अन्य आयामों पर भी पर्याप्त बल देने की बात करता है। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पूरक के रूप में जुड़कर व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः शिक्षा की सम्पूर्णता के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा में जीवन विज्ञान का समावेश हो।

जीवन विज्ञान के उद्देश्य

1. जीवन में परिष्कार के द्वारा स्वस्थ, बौद्धिक, व्यवहारिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व का निर्माण करना।

2. जीवन विज्ञान द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भावात्मक प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन (शोध) करना एवं अध्यापन करवाना।

3. जीवन के उन नियमों एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन एवं अन्वेषण करना, जिससे जीवन के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष का परिष्कार होता है।

4. स्वस्थ समाज की रचना के लिए ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों हेतु स्वस्थ जीवन की प्रायोगिक एवं अभ्यासात्मक प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत कर सके। साथ ही इसके माध्यम से वह समग्र एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में सहभागी बन सके।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षा के इस क्रांतिकारी आयाम को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए जीवन विज्ञान अकादमी प्रारम्भ से जैन विश्व भारती के अंतर्गत कार्यरत है। इस अकादमी के प्रयासों से देशभर में अनेक अकादमियां स्थापित हो चुकी हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में जीवन विज्ञान का विकास और प्रचार-प्रसार कर रही है।

जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम

जीवन विज्ञान के अंतर्गत व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य के समुचित विकास हेतु आधुनिक और प्राचीन विद्याओं के समावेश से परिपूर्ण अन्तर्विषयानुबंधी पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। विद्यालयीन स्तर पर जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम का प्रारूप निम्नानुसार है—

1. प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान।
2. प्रत्येक कालांश में विषय शिक्षण से पूर्व लघु प्रवृत्तियां।
3. मुख्यधारा के विषय के रूप में (प्रारम्भ से कक्षा 12 तक)।
4. पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियां।

पाठ्य सामग्री

जीवन विज्ञान : एक परिचय, जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज की संरचना,

जीवन विज्ञान : शिक्षा का नया आयाम, शिक्षा जगत् के लिए जरूरी है नया चिन्तन, जीवन विज्ञान : शिक्षक प्रशिक्षक मार्गदर्शिका, जीवन विज्ञान : शिक्षक निर्देशिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान लघु पुस्तिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का केलेण्डर, जीवन विज्ञान : संस्कारमाला (नर्सरी से कक्षा 2 तक), बालक का व्यक्तित्व विकास और मूल्यपरक शिक्षा के प्रयोग, जीवन विज्ञान की रूपरेखा, जीवन विज्ञान पाठ्य-पुस्तकें : कक्षा 3 से 12 तक, सहशैक्षिक प्रवृत्तियों के लिए जीवन विज्ञान प्रश्न मंच एवं केरियर क्लब, संवादों में जीवन विज्ञान, जीवन विज्ञान प्रायोगिकी आदि। (पाठ्य-पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी सहित गुजराती, कन्नड़, आदि कुछ प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध है।)

नोट : कक्षा ३, ४ एवं ५ के लिए हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की नवीन संशोधित पाठ्य-पुस्तकें आकर्षक बहुरंगी छपाई में उपलब्ध है।

जीवन विज्ञान से लाभ

1. बौद्धिक और भावनात्मक विकास का संतुलन। 2. आवेग और आवेश का संयम। 3. आत्मानुशासन की क्षमता का विकास। 4. जीवन व्यवहार निश्छल एवं मैत्रीपूर्ण। 5. मादक वस्तुओं से सेवन से मुक्ति। 6. स्वस्थ जीवन जीने का मार्ग। 7. नैतिक मूल्यों का विकास। 8. पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अच्छे ढंग से जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण। 9. जीवन की समस्याओं के समाधान की खोज। 10. स्व-शक्ति से परिचय एवं उसके उपयोग की दक्षता।

देश-विदेश में कार्यरत जीवन विज्ञान अकादमी

(दुबई) अजमन, (दिल्ली) महरौली नई दिल्ली, (राजस्थान) अजमेर, जयपुर, भीलवाड़ा, सरदारशहर, नोखा, चूरू, सुजानगढ़, जसोल, बांसवाड़ा, आमेट, बालोतरा (महाराष्ट्र) मुंबई, नवी मुंबई, जलगांव, नागपुर (पं. बंगाल) कोलकाता, (कर्नाटक) बैंगलोर, (तमिलनाडु) पल्लावरम-चेन्नई, ईरोड़, मदुरई, तिरूवन्नामलाई, (हरियाणा) गुड़गांव, भिवानी, (छत्तीसगढ़) दुर्ग-भिलाई, (मध्यप्रदेश) इन्दौर, रतलाम, (उड़ीसा) टिटिलागढ़ (गुजरात) कोबा-गांधीनगर, सूरत (आन्ध-प्रदेश) कुकटपल्ली-हैदराबाद (बिहार) करसर, आरा (आसाम) गौहाटी, धुबड़ी।

वार्षिक आयोजन

1. जीवन विज्ञान दिवस (02 नवम्बर 2017) कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी
2. संस्कार निर्माण प्रतियोगिता 2017
3. जीवन विज्ञान सेमिनार, कोलकाता (5-7 अक्टूबर 2017)
3. जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर
4. जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर
5. जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें

जीवन विज्ञान

स्वस्थ समाज की संरचना

जीवन विज्ञान अकादमी

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : 01581-226977, 09414919371

ई-मेल : jeevanvigyanacademy@gmail.com

समण संस्कृति संकाय

तेरापंथ के नवम अधिष्ठाता गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के क्रांत मस्तिष्क से प्रस्फुटित लोककल्याणकारी अवदानों में सामाजिक, आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है 'जैन विद्या का प्रसार'। 'संस्कारों की प्रयोगशाला : समण संस्कृति संकाय' जो भावी पीढ़ी में सद्-संस्कारों का वपन करने एवं उनके उन्नत व सुदृढ़ भविष्य का निर्माण करने के लिए जैन विद्या पाठ्यक्रम की लम्बी शृंखला के माध्यम से सन् 1977 से इस दिशा में प्रयासरत है। इस प्रयोगशाला के प्रयोगों को विश्वव्यापी बनाने की दिशा में वर्त ान में यह विभाग आचार्यश्री महाश्रमणजी के मार्गदर्शन में सतत् विकासशील है।

जैन विद्या अध्ययन का उद्देश्य

1. जैन विद्या अध्ययन के माध्यम से सभी आयु वर्ग के भाई बहनों को जैन धर्म के सिद्धांत, तत्त्व विद्या, दर्शन, मान्यताओं, परम्पराओं, आदर्शों से रूबरु करवाना। जैन विद्वान तैयार करना।

2. भौतिक संसाधनों की चकाचौंध व पाश्चात्य संस्कृति से लिप्त नई पीढ़ी को जैन संस्कृति से परिचित कराना व सद्संस्कारों का संरक्षण।

3. मानव जीवन के नियमों व प्रक्रियाओं का अध्ययन कराना जिससे जीवन में नैतिक मूल्यों का विकास हो, बौद्धिक विकास हो।

समण संस्कृति संकाय सम, शम और श्रम की संस्कृति के प्रचार का तंत्र है। उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जैन विद्या के आयाम को विश्वव्यापी बनाने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 300-350 केन्द्रों से हजारों प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं। परीक्षाओं के माध्यम से तैयार हुए प्रशिक्षक भी इसमें अपने समय व श्रम का नियोजन करते हैं। संकाय का पूरा तंत्र विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं का संचालन करता है।

पाठ्य सामग्री

संकाय द्वारा सुगम व सारगर्भित जैन विद्या ९ वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित होता है। जिसके निर्माण में मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' का श्रम नियोजित हुआ है। आधुनिक पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यक्रम के नवीनीकरण कार्य में जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं मुनिश्री जयंतकुमारजी का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। वर्तमान में जैन विद्या भाग 1 से 9 तक का पाठ्यक्रम इस प्रकार है

जैन विद्या प्रथम वर्ष (भाग-1)	जैन विद्या भाग-1 (हिन्दी, अंग्रेजी)
जैन विद्या द्वितीय वर्ष (भाग-2)	जैन विद्या भाग-2 (हिन्दी, अंग्रेजी)
जैन विद्या तृतीय वर्ष (भाग-3)	जैन विद्या भाग-3
जैन विद्या चतुर्थ वर्ष (भाग-4)	जैन विद्या भाग-4
	सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण
जैन विद्या पंचम वर्ष हेतु प्रवेश परीक्षा	जैन विद्या भाग-1 से 4
जैन विद्या पंचम वर्ष (भाग-5)	जैन तत्त्व विद्या खण्ड-1
	जैन परम्परा का इतिहास
जैन विद्या षष्ठम वर्ष (भाग-6)	जैन तत्त्व विद्या खण्ड-2, 3
	जैन धर्म : जीवन और जगत
जैन विद्या सप्तम वर्ष (भाग-७)	भिक्षु विहार दर्शन
	जीव-अजीव

जैन विद्या अष्टम वर्ष (भाग-8)	श्रमण महावीर आत्मा का दर्शन (हिन्दी अनुवाद) आचार्य भिक्षु
जैन विद्या नवम वर्ष (भाग-9)	जैन दर्शन मनन और मीमांसा (खण्ड-3 एवं 4)

जैन विद्या परीक्षाएं : जैन विद्या परीक्षाओं का नववर्षीय पाठ्यक्रम कक्षानुसार निर्धारित है, जिसकी पाठ्यपुस्तकें समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित होती है। जैन विद्या परीक्षाओं के माध्यम से प्रतिवर्ष भारत,नेपाल एवं दुबई सहित 300-350 केन्द्रों से हजारों की संख्या में प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं। परीक्षाओं का संचालन स्थानीय संघीय संस्थाएं करती है। समण संस्कृति संकाय द्वारा स्थानीय संघीय संस्थाओं के अंतर्गत इन परीक्षाओं के व्यवस्थित संचालन की दृष्टि से आंचलिक संयोजक व केन्द्र व्यवस्थापक नियुक्त किये जाते हैं, जो विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं के संचालन में सहयोग करते हैं।

दीक्षांत समारोह : लगभग पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में चातुर्मास काल में समण संस्कृति संकाय का दीक्षान्त समारोह आयोजित होता है, जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर वरीयता प्राप्त ज्ञानार्थियों को सम्मानित व पुरस्कृत किया जाता है।

जैन विद्या कार्यशाला : भाई-बहिनों में तत्त्वज्ञान की रुचि जागृत करने तथा तत्त्वज्ञान की जानकारी की दृष्टि से समण संस्कृति संकाय एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा संयुक्त रूप से गत पांच वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर 'जैन विद्या कार्यशाला' का आयोजन किया जा रहा है। प्रतिवर्ष जैन विद्या एवं तत्त्वज्ञान से संबंधित पुस्तक को आधार मानते हुए प्रतियोगिता आयोजित होती है, जिसकी 15 दिन की कक्षा चारित्रात्माओं के सान्निध्य में प्रतिदिन चलती है, जहां अध्ययन करवाया जाता है। उसके पश्चात् पूरे देश में एक दिन विभिन्न केन्द्रों पर लिखित परीक्षा आयोजित होती है। इस उपक्रम में तेरापंथ युवक परिषद् की स्थानीय शाखाओं का पूर्ण सहयोग रहता है।

राज्य स्तरीय/आंचलिक जैन विद्या कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन: समण संस्कृति संकाय द्वारा कार्यकर्ताओं को जैन विद्या का प्रशिक्षण प्रदान करने की दृष्टि से विभिन्न राज्यों/अंचलों में चारित्रात्माओं/समण-समणीवृंद के सान्निध्य में कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन समय-समय पर किया जा रहा है।

अन्य कार्यक्रम: जैन विद्या प्रचार-प्रसार हेतु जैन विद्या सप्ताह, जैन विद्या संगठन यात्रा, जैन विद्या सम्पर्क कक्षाएं एवं विभिन्न ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन नियमित रुप से किया जाता है। पिछले चार वर्षों से जैन-अजैन-तेरापंथी विद्यालयों में जैन विद्या परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

मालचन्द बेगानी	**पन्नालाल पुगलिया**	**निलेश कुमार बैद**	**महावीर धारीवाल**
विभागाध्यक्ष	संयोजक	संयोजक	संयोजक
09810031623	09829541396	09840053956	09422561399

समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती
लाडनूं-341306 (राजस्थान)
फोन नं. : 01581-226025, 226974 मो. : 9785442373
E-mail : sssankay@gmail.com

तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट संस्थाएं

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
महासभा भवन
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कोलकाता - 700001 (पश्चिम बंगाल)
फोन : 033-22357956, 22343598
E-mail : info@jstmahasabha.org

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्
प्रशासकीय कार्यालय
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन - 011-23210593
E-mail : abtyp1964@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
'रोहिणी' जैन विश्व भारती परिसर
पो. लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226070

जैन विश्व भारती
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला : नागौर (राजस्थान)
01581-226080,226025,224671
E-mail jainvishvabharati@yahoo.com
Website : www.jvbharati.org

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर (राजस्थान)
01581-226230,226110
E-mail : office@jvbi.ac.in
Website : http:/www.jvbi.ac.in

जय तुलसी फाउण्डेशन
एक्सलैण्ड प्लैस, तीसरा तल्ला
कोलकाता - 17
फोन - 033-22902277,22903377
E-mail : jtfcal@gmail.com

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23233345, 23239963
E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन. 011-23236738, 23222965

अणुव्रत विश्व भारती
विश्व शांति निलयम्
पो. - राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-220516, 220628
E-mail : rajsamand@anuvibha.in

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद
चपलोत गली
राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-202010, 223100
E-mail : rass_rajsamand@rediffmail.com

आदर्श साहित्य संघ
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23234641, 23238480
E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

पारमार्थिक शिक्षण संस्था
'अमृतायन' भवन
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226032, 224305

अमृत वाणी
हिन्द पेपर हाउस
951, छोटा छिपावाड़ा
चावड़ी बाजार
दिल्ली - 110006
फोन : 011-23264782, 23263906
E-mail : hindpaper@yahoo.com

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान
'शक्तिपीठ' नोखा रोड
पो. - गंगाशहर - 334401
जिला - बीकानेर (राजस्थान)
फोन : 0151-2270396
E-mail : gurudevtulsi@gmail.com

प्रेक्षा विश्व भारती
गांधीनगर हाइवे
कोबा पाटिया
गांधीनगर - 382009 (गुजरात)
फोन. 079-23276271, 23276606
E-mail : prekshabharati@yahoo.com

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 08094368313,08107451951
E-email : tpfoffice@tpf.org
website : www.tpf.org.in

शिविर कार्यालय
आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल
सम्पर्क सूत्र :
हेमन्त बैद : 9672996960,7044448888
E-mail : campoffice@gmail.com

With Best Compliments from

VAISHNODEVI Lush Green

BUILDERS | DEVELOPERS | PROMOTERS

Regd. Office : **Vaishnodevi Lush Green Pvt. Ltd.**

459, 4th Floor, 12th Main, M. C. Layout Near Vijaynagar Post Office, Bangalore-560040 (Karnataka)

Ph. : 23146429, M : 9620799999, E-mail : vimalkataria9@gmail.com

Vimal, Chirag, Yash Kataria

Bemali-Bangalore

ABCi INFRASTRUCTURES PVT. LTD.

INFRASTRUCTURALLY YOURS

204 South Delhi House, 12 Zamrudpur Community Centre, Kailash Colony, New Delhi 110 048
Phone: 011 – 29234131, 29232405, Fax No. 011 – 66629606, E-mail: delhi@abciinfra.com

KOLKATA OFFICE

"DN-23, The Knowledge Hub
Sector – 5, Salt lake City, Kolkata
Phone: 033 – 40044117, 40044118
Fax No. 033 – 40044119
E-mail: kolkata@abciinfra.com

SILCHAR OFFICE

"Capital Travels Buildings"
Club Road, Silchar 788 001
Cachar (Dist.) Assam.
Phone : 03842 – 247957, 247471, 262396
Fax No. 03842 – 236054
E-mail: silchar@abciinfra.com

GUWAHATI OFFICE

1/3 "Mc Donald Tower, 1st Floor
G.S. Road, Bhangagarh,
Guwahati 781 005
Phone: 0361 – 2458819
Fax No. 0361 – 2464054
E-mail: ghy@abciinfra.com

AIZWAL OFFICE

YC-08, Vanlal fela Building,
Aizawl – 796012 (Mizoram)
Phone: 0389–2396007, 2396768
Fax No. 0389 – 2396007
E-mail: abciaizawl@rediffmail.com

Website of the company: www.abciinfra.com

With Best Compliments from

दूसरों को उपदेश देने से पूर्व
जरा यह भी आत्मालोचन करें कि
उपदेश का कितना अंश तुम्हारे जीवन में है ?

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

पूज्य पिताजी स्व. रणजीतसिंह जी बैद की पुण्य स्मृति में

प्रकाश प्रमोद बैद

लाडनूं-कोलकाता

With Best Compliments from

धर्म की कसौटी जीवन का व्यवहार है, धर्मस्थ स्थान नहीं।

-आचार्य भिक्षु

इस दुनिया में कोई स्थायी नहीं, सब राही हैं।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

प्यारेलाल, विनोद, संजय, सुनील, विनीत, वंश, अंश, वीर पितलिया

माण्डा (राजस्थान) - चेन्नई

With Best Compliments from

अच्छाइयों के प्रति प्रेम पैदा कर लो। फिर उनका आचरण आसान हो जाएगा।
बुराइयों से घृणा कर लो। फिर उन्हें छोड़ना आसान हो जाएगा।

-आचार्य महाश्रमण

'श्रद्धानिष्ठ श्रावक'
स्व. हनुमानमलजी दूगड़ 'जौहरी' की पुण्य स्मृति में

: श्रद्धावनत :

'श्रद्धामूर्ति की प्रतिमूर्ति' गिन्नीदेवी दूगड़
मदनचंद, आलोक, अजित दूगड़
समस्त 'जौहरी' दूगड़ परिवार
(सरदारशहर-मुम्बई-सूरत)

Royal Diam

DC-4220, Bharat Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex
Bandra (E) Mumbai-400051 | T : 022-23611056/57/58
F : 022-23611055 | E : royal_diam@hotmail.com

701-702, Gangotri Tower, Kesarba Market
Gotalawadi, Katargam, Surat - 395004
T : 0261-2531700, 2532800 | F : 0261-2531100

With Best Compliments from

वे लोग धन्य हैं, जो सदा शान्त रहते हैं और
जिनके चेहरे पर हर परिस्थिति में मुस्कान देखने को मिलती है।

– आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' भंवरलाल लोढा-इलायची देवी लोढा

''कल्याण मित्र'' सी.ए. सलिल लोढा-किरण लोढा

गजेन्द्र लोढा - भावना लोढा

गर्वित, धैर्य, लकी, हितार्थ लोढा एवं समस्त लोढा परिवार

आमेट-मुलुंड (मुम्बई)

'A' Grade by NAAC and 'A' Category by MHRD

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

(मान्य विश्वविद्यालय)

नियमित पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम : एम.ए. : ▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ दर्शन ▸ संस्कृत ▸ प्राकृत ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ क्लीनिकल साइकोलॉजी ▸ अहिंसा एवं शान्ति ▸ राजनीति विज्ञान ▸ समाज कार्य ▸ अंग्रेजी ▸ एम.एड. (उपरोक्त सभी विषयों में पी-एच.डी. की सुविधा) एम.फिल.: ▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ प्राकृत एवं जैन आगम, स्नातक पाठ्यक्रम : ▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम. ▸ बी.लिब ▸ बी.एड.(केवल महिलाओं के लिए), विविध पाठ्यक्रम : ▸ प्रमाण पत्र एवं डिप्लोमा

पत्राचार पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम : ▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ शिक्षा ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ अंग्रेजी ▸ अहिंसा एवं शांति

स्नातक पाठ्यक्रम : बी.ए. ▸ बी.कॉम. ▸ बी.लिब., प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम, बी.पी.पी. पाठ्यक्रम : ▸ वे आवेदक जो 10+2 उत्तीर्ण नहीं हैं अथवा प्राथमिक औपचारिक योग्यता नहीं रखते हैं, लेकिन 18 वर्ष की उम्र पूर्ण कर चुके हों, विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पाठ्यक्रम बी.पी.पी. परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।

फोन : 01581-224332, मो. 9462658701, 9462658501, Web : www.jvbi.ac.in, e-mail : jvbiladnun@gmail.com

।। जय भिक्षु ।।

ज्ञानशाला रजत जयन्ती वर्ष

।। जय महाश्रमण ।।

विद्या का मूल है सत्य वचन, सत्य आचरण।

– आचार्य तुलसी

ज्ञानशाला ज्ञानवृद्धि व संस्कार पल्लवन का माध्यम है।

– आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

श्रीचंद, उम्मेद, विजयसिंह, अजय, अभिषेक, आतिष, तनिश, आरव एवं विराज मोहोनोत

(डीडवाना निवासी, बैंगलुरु प्रवासी)

Jay Group

Manufacturers & Exporters of
Plastic Tagging Pins, Loop Pins, Tagging Guns, Trimmers &
Texitile Spot Cleaning Guns under popular brands of :

ARROW® Wonder® TagStar® UNIVERSAL® CHOKHO®

No. 5 Charles Campbell Road, Cox Town, Bengaluru - 560005, Karnataka, India.
Tel. 0091 (0) 80- 25483928/25483508; Fax. 0091 (0)80-25488780/25484364;
E-mail : enquiry@jaygroups. com; Website - www.jaygroups.com